गणतंत्र दिवस परेड
Republic Day Parade

सत्यमेव जयते

26 जनवरी 2011 (माघ 6, शक संवत् 1932)
26 January 2011 (6 Magha, Saka Samvat 1932)

सत्यमेव जयते

गणतंत्र दिवस परेड
Republic Day Parade

26 जनवरी 2011 (माघ 6, शक संवत् 1932)

26 January 2011 (6 Magha, Saka Samvat 1932)

कार्यक्रम		Programme	
0957 बजे	राष्ट्रपति का, मुख्य अतिथि, इण्डोनेशिया गणराज्य के राष्ट्रपति, के साथ राजकीय सम्मान सहित आगमन।	0957 hrs	The President, accompanied by the Chief Guest, President of the Republic of Indonesia, arrives in State.
	प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रपति तथा मुख्य अतिथि की अगवानी।		The Prime Minister receives the President and the Chief Guest.
	प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रपति तथा मुख्य अतिथि से रक्षा मंत्री, रक्षा राज्य मंत्री, तीनों सेनाध्यक्षों तथा रक्षा सचिव का परिचय।		The Prime Minister presents to the President and the Chief Guest, Raksha Mantri, Raksha Rajya Mantri, the three Service Chiefs and Defence Secretary.
	राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री तथा मुख्य अतिथि का मंच की ओर प्रस्थान। प्रधान मंत्री, राष्ट्रपति और मुख्य अतिथि का उनके आसनों तक अगवानी करते हैं।		The President, the Prime Minister and the Chief Guest proceed to the rostrum. The Prime Minister leads the President and the Chief Guest to their seats.
	राष्ट्र–ध्वज फहराया जाता है तथा राष्ट्रपति के अंगरक्षक राष्ट्रीय सलामी देते हैं। बैंड द्वारा राष्ट्रगान की प्रस्तुति तथा 21 तोपों की सलामी।		The National Flag is unfurled and the President's Body Guard presents the National Salute. The Band plays the National Anthem and a 21-Gun Salute is fired.
	गणतंत्र परेड आरंभ होती है।		The Republic Day Parade commences.
	सांस्कृतिक झांकी।		The Cultural Pageant
	मोटर साइकलों पर करतब।		Motor Cycle Display
	विमानों द्वारा सलामी।		Flypast
	राष्ट्रीय सलामी।		National Salute
	राष्ट्रपति का मुख्य अतिथि के साथ राजकीय सम्मान सहित प्रस्थान।		The President, accompanied by the Chief Guest, departs in State.

5

परेड क्रम

The Order of March

भारतीय वायु सेना के हेलिकाप्टरों द्वारा पुष्प वर्षा

Showering of flower petals by IAF Helicopters

परेड कमांडर

Parade Commander

परेड उप–कमांडर

Parade Second-in-Command

परमवीर चक्र तथा अशोक चक्र पुरस्कार विजेता

Param Vir Chakra and Ashok Chakra Awardees

सेना

Army

सवार दस्ते

Mounted Column

61 घुड़सवार दस्ता

61 Cavalry

मैकेनाइज्ड दस्ते

Mechanized Columns

टी – 90 टैंक (भीष्म)

Tank T-90 (Bheesma)

ब्रह्मोस लांचर सिस्टम

BrahMos Launcher System

पिनाका लांचर सिस्टम

Pinaka Launcher System

रणनीतिक नियंत्रण रडार–रिपोर्टर

Tactical Control Radar- Reporter

नाभिकीय जैविक रासायनिक टोही वाहन

Nuclear Biological Chemical Recce Vehicle

स्वदेशी पोंटून चल सेक्शन पुल

Indigenous Pontoons Movable Section Bridge

एकीकृत नेटवर्क प्लेटफार्म

Integrated Network Platform

प्रहार – 510

PRAHAR - 510

उन्नत हल्के हेलिकाप्टरों द्वारा सलामी

Fly past by Advanced Light Helicopters

मार्च करती टुकड़ियां

पंजाब रेजिमेंट

सशस्त्र कोर केन्द्र एवं स्कूल : बैंड धुन
पंजाब रेजिमेंटल केन्द्र "गंगोत्री"

ग्रेनेडियर रेजिमेंट

राजपूताना राइफल्स रेजिमेंट

तोपखाना केन्द्र : बैंड धुन
राजपूत रेजिमेंटल केन्द्र "गॉड ऑफ वार"

राजपूत रेजिमेंट

सिख लाईट इन्फेन्ट्री रेजिमेंट

गार्ड ब्रिगेड : बैंड धुन
महार रेजिमेंटल केन्द्र "प्रगति"

जम्मू कश्मीर लाईट इन्फेन्ट्री रेजिमेंट

39 गोरखा प्रशिक्षण केन्द्र

पैरा प्रशिक्षण केन्द्र : बैंड धुन
मराठा लाईट इन्फेन्ट्री "वीर भारत"
रेजिमेंटल केन्द्र

प्रादेशिक सेना

Marching Contingents

Punjab Regiment

Armed Corps Centre & School : Band playing
Punjab Regimental Centre *"Gangotri"*

Grenadiers Regiment

Rajputana Rifles Regiment

Artillery Centre : Band playing
Rajput Regimental Centre *"God of War"*

Rajput Regiment

Sikh Light Infantry Regiment

The Brigade of the Guards : Band playing
Mahar Regimental Centre *"Pragati"*

Jammu & Kashmir Light Infantry Regiment

39 Gorkha Training Centre

Para Training Centre : Band playing
Maratha Light Infantry *"Vir Bharat"*
Regimental Centre

Territorial Army

नौसेना

नौसेना ब्रास बैंड : बैंड धुन
मार्च करती सैन्य टुकड़ी "जय भारती"

झांकी (शानदार शुरुआत–देदीप्यमान भविष्य)

Navy

Naval Brass Band : Band playing
Marching Contingent *"Jai Bharti"*

Tableau (Glorious Wake-Vibrant Future)

वायुसेना

वायुसेना बैंड : बैंड धुन
मार्च करती वायु सेना टुकड़ी "साउंड बैरियर"

वाहन दस्ता – भारतीय वायुसेना में नेटवर्क केन्द्रित संक्रियाओं का प्रदर्शन

Air Force

Band Contingent : Band playing
Marching Contingent *"Sound Barrier"*

Vehicular Column - Showcasing the Network Centric Operations in the IAF

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, उपस्कर टुकड़ी

'तेजस'– प्रशिक्षक
नोसैना अन्तर्जलीय शस्त्र
दीर्घ परास ठोसावस्था सक्रिय फेस्ड
अरे राडार
जीवन रक्षक प्रोद्योगिकियाँ– झांकी

भूतपूर्व–सैनिक

जाट रेजिमेंटल केन्द्र : बैंड धुन
एवं 11 गोरखा राइफल्स रेजिमेंटल केन्द्र "विजय भारत"
पूर्व–सैनिकों की मार्च करती हुई टुकड़ी

अर्ध–सैनिक एवं अन्य सहायक सिविल बल

बैंड : सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) : बैंड धुन
बीएसएफ की मार्च करती हुई टुकड़ी "विजय भारत"

बैंड : सीमा सुरक्षा बल ऊंट : बैंड धुन
सीमा सुरक्षा बल ऊंटों की टुकड़ी "हम हैं सीमा सुरक्षा बल"

असम राइफल्स की मार्च करती टुकड़ी
बैंड : असम राइफल्स : बैंड धुन
तटरक्षक बल की मार्च "असम राइफल्स
करती टुकड़ी का गीत"

बैंड : केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल : बैंड धुन
केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की "सेवा भक्ति का
मार्च करती टुकड़ी यह प्रतीक"

बैंड : भारत–तिब्बत सीमा पुलिस : बैंड धुन
भारत–तिब्बत सीमा पुलिस "कदम–कदम
की मार्च करती हुई टुकड़ी बढ़ाए चल"

बैंड : केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल : बैंड धुन
केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल "सारे जहां से
की मार्च करती टुकड़ी अच्छा"

बैंड : सशस्त्र सीमा बल : बैंड धुन
सशस्त्र सीमा बल "जोश भरा है
की मार्च करती टुकड़ी सीने में"

DRDO Equipment Columns

Tejas -Trainer
Naval Underwater Weapons
Long Range Solid State Active Phased Array Radar (LSTAR)
Life Support Technologies - Tableau

Ex-Servicemen

Jat Regimental Centre : Band playing
& "*Vijay Bharat*"
11 Gorkha Rifles Regimental Centre
Ex-Servicemen Marching Contingent

Para-Military And Other Auxiliary Civil Forces

Band: BSF : Band playing
BSF Marching Contingent "*Vijay Bharat*"

BSF Camel Contingent
Band: BSF Camel : Band playing
"*Hum Hai Seema Suraksha Bal*"

Assam Rifles Marching Contingent
Band: Assam Rifles : Band playing
Coast Guard Marching "*Assam Rifles*
Contingent *Song*"

Band: CRPF : Band playing
CRPF Marching Contingent "*Seva Bhakti Ka Yeh Prateek*"

Band: ITBP : Band playing
ITBP Marching Contingent "*Kadam Kadam Badhaye Chal*"

Band: CISF : Band playing
CISF Marching Contingent "*Saare Jaahan Se Achha*"

Band: SSB : Band playing
SSB Marching Contingent "*Josh Bhara Hai Seene Main*"

बैंड : रेलवे सुरक्षा बल रेलवे सुरक्षा बल की मार्च करती टुकड़ी	: बैंड धुन "विजय भारत"	Band: RPF RPF Marching Contingent	: Band playing *"Vijay Bharat"*
बैंड : दिल्ली पुलिस दिल्ली पुलिस की मार्च करती टुकड़ी	: बैंड धुन "दिल्ली पुलिस"	Band: Delhi Police Delhi Police Marching Contingent	: Band playing *"Delhi Police"*

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी)

National Cadet Corps (NCC)

बैंड : राष्ट्रीय कैडेट कोर के छात्र छात्रों की मार्च करती हुई टुकड़ी	: बैंड धुन "कदम–कदम बढ़ाए जा"	Band: Boys (NCC) Boys Marching Contingent	: Band playing *"Kadam Kadam Badhaye Ja"*
बैंड : राष्ट्रीय कैडेट कोर की छात्राएं छात्राओं की मार्च करती हुई टुकड़ी	: बैंड धुन "सारे जहां से अच्छा"	Band: Girls (NCC) Girls Marching Contingent	: Band playing *"Saare Jahan Se Achha"*

राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस)

National Service Scheme (NSS)

सामूहिक पाइप और ड्रम	: बैंड धुन "मिली जुली"	Massed Pipes & Drums	: Band playing *`Milijuli'*
राष्ट्रीय सेवा योजना की मार्च करती टुकड़ी		National Service Scheme Marching Contingent	

सांस्कृतिक प्रस्तुति

झांकियां : तेईस

खुली जीपों में राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार विजेता बच्चे

बच्चों की प्रस्तुति

स्कूली बच्चों के कार्यक्रम : पांच

i) डहल ठुंगरी नृत्य

ii) लोक नृत्य रंगीलो राजस्थान

iii) परभा दण्डनाच

iv) भारतीय संस्कृति

v) लोक नृत्य भांगड़ा

मोटर साइकिलों पर करतब : सेना – जांबाज़

विमानों द्वारा सलामी*

गुब्बारों का छोड़ा जाना : भारतीय मौसम विज्ञान विभाग

* मौसम अनुकूल रहने पर।

The Cultural Pageant

Tableaux : Twenty three

National Bravery Award Winning Children in open Jeeps

Children's Pageant

School Children Items : Five

i) Dahal Thungri Dance

ii) Folk Dance of Rangeelo Rajasthan

iii) Parbha Dandanacha

iv) Indian Culture

v) Folk Dance Bhangra

Motor Cycle Display : Army - Dare Devil

FLY-PAST*

Release of balloons: Indian Meteorological Department

* *If weather conditions permit.*

10

सांस्कृतिक प्रस्तुति

आज भारत अपना 62वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। यह सांस्कृतिक प्रस्तुति हमारी प्राचीन सभ्यता, सांस्कृतिक विविधता और प्रगति की झलक प्रस्तुत करती है जो भारत के गौरवशाली अतीत की प्रतीक है तथा समृद्ध और खुशहाल भविष्य के प्रति देशवासियों की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करती है।

रंग बिरंगी झांकियों का वर्ण–विन्यास भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और प्रौद्योगिकीय पहलुओं का चित्रण करता है। इन झांकियों में हमारे भौगोलिक सौंदर्य तथा वास्तु–शिल्पीय धरोहर को दिखाया गया है।

Cultural Pageant

Today, India is celebrating its 62nd Republic Day. The cultural pageant presents a glimpse of our ancient civilisation, cultural diversity and progress symbolising India's glorious past and reflects the citizens' aspirations for a prosperous and happy tomorrow.

The array of colourful tableaux depicts the social, cultural, economic and technological facets of India. These tableaux capture the beauty of our landscape and architectural heritage.

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर मूर्धन्य पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित हैं। वह उनकी आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक व सौंदर्यपरक कृतियों द्वारा आकृष्ट एवं प्रेरित करते रहे हैं। उनकी अथक सृजनात्मकता साहित्य, कला, संगीत, नृत्य एवं नाट्य की विस्तृत परिधि में अभिव्यक्त होती है।

गुरूदेव की 150वीं जयन्ती के अवसर पर संस्कृति मंत्रालय एवं संगीत नाटक अकादमी ने उनके बहुआयामी योगदान को झांकी के रूप में प्रदर्शित करने का प्रयास किया है।

गीतांजलि के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित ठाकुर एवं उनकी विविध साहित्य कृतियां झाँकी में दिखाई गई हैं। ठाकुर की विहंगम दृष्टि को शांति निकेतन–विश्वभारती में मूर्तरूप प्राप्त हुआ। मध्य भाग में आम्रकुंज में पठन–पाठन, प्रसिद्ध घंटा ताल, वाद्यों सहित रवीन्द्र संगीत व उनकी बेजोड़ चित्रकारियाँ भी उनकी प्रसिद्ध कविता 'एकला चलो रे' के साथ देखी जा सकती हैं।

अन्तिम भाग में उनके द्वारा अभिकल्पित मिट्टी की कुटिया 'श्यामली' के सामने महात्मा गांधी के साथ महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करते हुए दिखाए गए हैं। झाँकी के शिखर पर राष्ट्रीय गान उत्कीर्ण किया गया है – जिसका आशय है कि 'आप जन सामान्य के मन मस्तिष्क पर शासन करते हैं तथा भाग्य निर्माता हैं।

ठाकुर भारत को राजनैतिक मुक्ति व आजादी दिलाने को अपने शब्दों में इस प्रकार अभिव्यक्त करते है (जो कि झाँकी के पृष्ठ भाग पर उत्कीर्ण किया गया है):

जहाँ पर मस्तिष्क भय मुक्त हो' जहाँ स्वाभिमान से हमारा सिर ऊंचा रहे.....

संस्कृति मंत्रालय

Rabindranath Tagore

Rabindranath Tagore has been a towering presence and his work has engaged us at many levels – spiritual, social, political, aesthetic – and thrown up models to emulate and ideas to challenge.

Ministry of Culture and Sangeet Natak Akademi seek to focus on Tagore's multifaceted contribution on his 150th birth anniversary.

The tableau depicts Tagore amid his literary creations including Geetanjali, which won him the Nobel Prize. Tagore's vision found embodiment in the Vishwa-Bharati, Shantiniketan. The middle part depicts lessons imparted in the Amrakunj, the famous Ghanta Tala and musical instruments rendering Rabindra Sangeet. His paintings are seen with his famous verse "Ekla Chalo Re".

His role as a poet-philosopher of the emerging Indian nation is established in the concluding part with Mahatma Gandhi under the mud-hut Shyamoli designed by him. India's National Anthem, a creation of Tagore meaning 'Thou art the ruler of the minds of all people, Dispenser of India's destiny.' is engraved on the top.

Tagore had more than India's political emancipation in mind best expressed in his own words. (as inscribed in the rear of the tableau):

Where the mind is without fear and the head is held high.....

Ministry of Culture

12

जयदेव और गीतगोविन्द

शास्त्रीय संस्कृत साहित्य में रत्न के समान बहुमुल्य ग्रंथ गीतगोविन्द की रचना 12वीं सदी के दौरान उड़िया भाषा के संत कवि जयदेव द्वारा की गई थी। गीतगोविन्द बारह अध्यायों की रचना है। हरेक अध्याय आगे चौबीस उप भागों में विभाजित है जिन्हें "प्रबन्ध" कहा जाता है। इन प्रबन्धों में आठ–आठ के समूह में छन्दों के संग्रह हैं जिन्हें "अष्टपदीप" कहा जाता है। गीतगोविन्द में मुख्य रूप से भगवान कृष्ण और राधा के शाश्वत प्रेम सम्बन्धों के बारे में वर्णन किया गया है। भारत में भक्ति सम्प्रदाय के विकास में इनका अत्यधिक महत्व रहा है। गीतगोविन्द के गीतों को पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर में गाया जाता था। गीतगोविन्द का पहला गीत "दशावतार स्त्रोत" कहा जाता है। इसमें भगवान विष्णु के दस अवतारों के बारे में वर्णन किया गया है। रचना किए जाने के पश्चात से ही यह ग्रंथ सम्पूर्ण भारत में लोकप्रिय हो गया। गीतगोविन्द का इस काल खण्ड के दौरान उड़ीसा के संगीत, नृत्य, कला, वास्तु तथा संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

Jayadeva and Gitagovinda

Gitagovinda, a gem in the classical Sanskrit Litrature has been written by the saint Poet of Orissa, Jayadeva during 12th century A.D. Gitagovinda is the composition of twelve Chapters. Each chapter is further sub-divided into twenty four divisions called "Prabandhas". The Prabandhas contain couplets grouped into eights called "Astapadis". Gitagovinda mainly describes the relationship of eternal love between Lord Krishna and Radha. It had great importance in the development of the Bhakti Cult in India. The songs of Gitagovinda were recited in the Jagannath Temple, Puri. The first song of Gitagovinda is called "Dasavatar Strotat". It describes ten Avatars (incarnations) of Lord Vishnu. Since its creation, the work has become very popular all over India. Gitagovinda has greatly influenced the music, dance, art, architecture and culture of Orissa over the years.

उड़ीसा ***Orissa***

13

असम अंकिया नाट या भावना

असमीया नाटक और थियेटर की परम्परा शुरू होती है अंकिया नाटक या भावना के जरिए जो भक्ति युग की देन है। इस परम्परा के प्रणेता है भक्ति आन्दोलन के प्रवक्ता, कवि, नाटककार, संगीतकार, समाज संस्कारक, श्रीमंत शंकर देव जी। (1449–1568) अंकिया नाटक में दृश्यकला एवं परिवेशित कला के सभी गुणों से सम्पन्न होने के कारण ही यह कला सभी सांस्कृतिक पुनरोत्थान से प्रतिभाशाली है।

शंकरदेव जी के साथ–साथ उनके अनुयायियों कवि एवं साहित्यकारों द्वारा रचित अंकिया नाटक की प्रधान विशेषता है उसके संगीत, नृत्य एवं नाट्य कला का कुशल संयोजन। यात्रा, नाट या नृत्य से पहचानी जाने वाले इस विधा का मूल दर्शन है भक्ति। भक्ति के जरिए भगवान श्री कृष्ण की सारी लीलाओं से धर्म का मार्ग दर्शन कराता है। इस नाटक का एक विशेष बोली से निर्माण किया जाता है। उस बोली को ब्रजबोली कहते है। गायन–वायन और सूत्रधार इस नाटक के चरित्र को तथा निर्देशित करने की अहम भूमिका निभाता है।

इस झांकी में भागवत पुराण से विष्णुभक्त प्रहलाद की कहानी है। प्रतीक के सामने की ओर सूत्रधार, गायन–वायन के साथ संगीत के कलाकारों को दिखाया गया है। पीछे की ओर भगवान विष्णु अवतार नरसिंह को दैत्यराज हिरण्यकशिपु की हत्या करने का दृश्य अंकित किया गया है। उनके सामने प्रहलाद हाथ जोड़ कर प्रार्थना कर रहे हैं।

असम

Assam Ankiya Nat or Bhaona

The history of Assamese drama and theatre starts with Ankiya Nat introduced by the great saint, poet and composer Srimanta Sankaradeva (1449-1568-AD) in the wake of the Bhakti Movement in Assam which also brought about an all pervasive cultural resurgence with an efflorescence of all arts, both visual and performing.

Ankiya Nat or Bhaona based on the plays of Sankaradeva and his apostles was a dexterous combination of music, dance and drama. Originally called as yatra, nata and nritya, the plays centering around the philosophy of Bhakti and the playfulness of the Lord Krishna were written in Brajavali, a stylized language. The Gayan (Singers), Bayan (Musicians) and the Sutradhara (the director-cum-narrator) take principal roles in the play to direct the characters and their performative roles.

In the tableau, a scene from the story of Bhagavata Purana-Bhakta Prahlad is created. Gayan-Bayan is in the foreground followed by the Sutradhar with the musicians (in the tractor portion) and the trailor portion depict the scene of killing of Hiranyakashipu (the demon king) by Narasimha, one of the Avatars of Lord Krishna while Bhakta Prahlad is praying to the Almighty with folded hands.

Assam

14

लावनी

लोककलाओं में लावनी एक लोकप्रिय और पारंपरिक नृत्य विधा है, जिसने पूरे ग्रामीण महाराष्ट्र को मोहित कर लिया है। लावनी का संबंध 'लावण्य' शब्द से जोड़ा जाता है, जिसका मतलब है बला का सौन्दर्य। महाराष्ट्र में ग्रामीण उत्सवों में तारों से जगमगाते खुले आसमान के नीचे रंगीन तंबुओं में या रंगभवन में मंच पर लावनियाँ प्रस्तुत की जाती हैं।

जो कलाकार लावनी पेश करते हैं वे मूलतः ग्रामीण क्षेत्र के होते हैं, इसलिये वे इस कला को विशिष्ट ग्रामीण खुशबू प्रदान करते हैं। पुराने ज़माने में लावनी कलाकार ग्रामीण उत्सवों या मेलों के अवसर पर एक गाँव से दूसरे गाँव जाने के लिये बैलगाड़ी का उपयोग करते थे।

लावनी कला पेश करते समय प्रमुख युवती नर्तक पूरी टीम की अगुवाई करती हैं और प्रायः किसी नाजुक मौके पर वह प्रभावशाली ढंग से प्रवेश करती है।

Lawani

Lawani is the most popular and traditional dance among the 'folk forms' which have enthralled rural Maharashtra. Lawani is identified with the word " Lawanya" which means 'Aesthetic Beauty'. In the State of Maharashtra, Lawanis are enthusiastically performed during village festivals under the open star-studded sky in colourful tents or on the stage in the auditorium.

The artists who perform Lawani basically hail from the rural areas thus imparting the typical village aroma. In the days gone by, the Lawani artists used to travel by bullock cart from one village to another during village festivals and fairs.

In a Lawani performance, the main female artist leads the team and normally makes an impressive entry at a crucial point.

महाराष्ट्र ***Maharashtra***

15

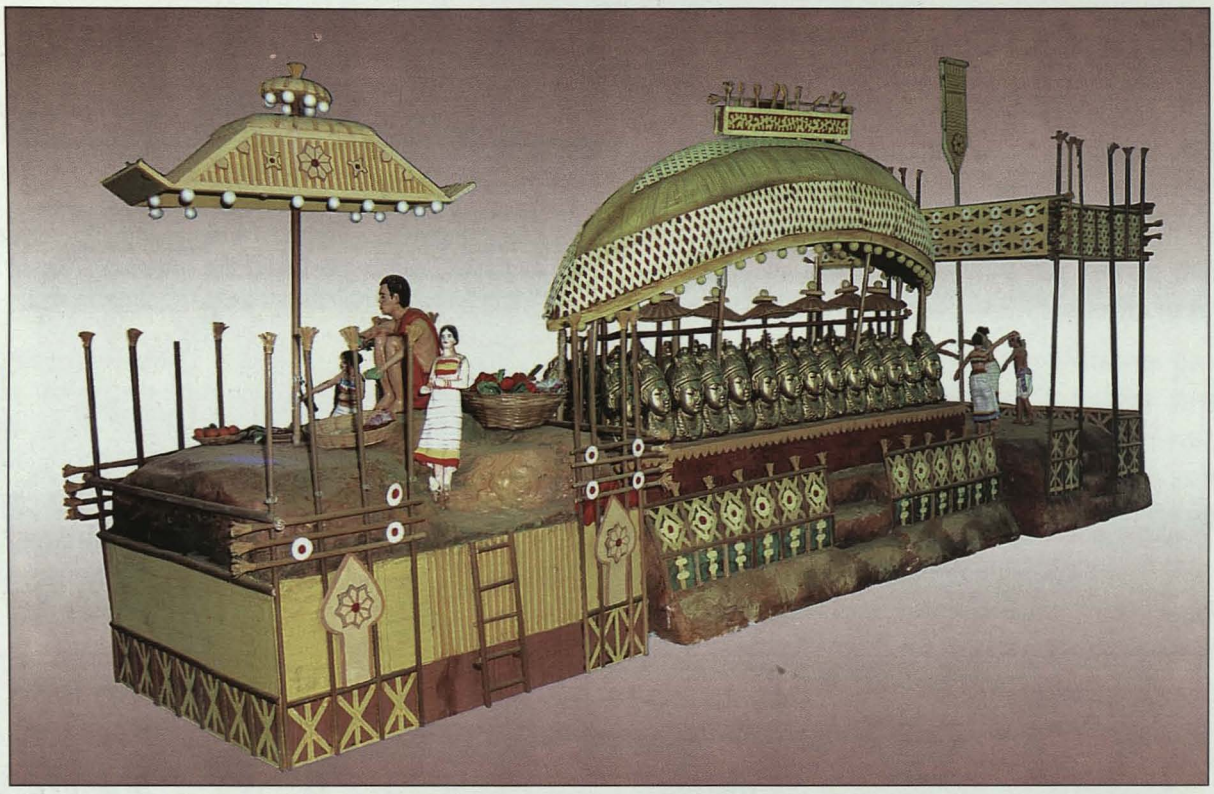

खारची–सामुदायिक एकता एवं सद्भाव पर आधारित सदियों पुराना त्रिपुरा का त्यौहार

त्रिपुरा में लोकप्रिय अनेक त्यौहारों में से एक त्यौहार जिसका वहां अत्यधिक महत्व है, यह चौदह देवों की पूजा है जिसे आमतौर पर खारची पूजा के नाम से जाना जाता है और पुराने अगरतला में जुलाई के महीने में मनाया जाता है। खारची त्यौहार त्रिपुरा का विशेष त्यौहार है। यह त्रिपुरा के राज परिवार के कुलदेवता की पूजा का उत्सव है। कभी सिर्फ राजपरिवार में की जाने वाली चौदह देवों की पूजा अब जाति एवं सम्प्रदाय की भावना से उपर उठकर त्रिपुरा में आम जनता के त्यौहार के रूप में बदल गई है। सप्ताह भर चलने वाले इस त्यौहार का आयोजन मंदिर परिसरों में किया जाता है। खारची शब्द 'ख्या' का तद्भव रूप है जिसका तात्पर्य धरती है। खारची पूजा इस प्रकार उसी धरती मां की पूजा है जो अपने संसाधनों में मानव जाति का पालन–पोषण एवं कल्याण करती है।

Kharchi- The Age Old Tripuri Festival on Community Harmony and Integration

Of the many festivals current in Tripura, the one that occupies the pride of place is Worship of the fourteen deities popularly known as Kharchi Puja celebrated in the month of July at Old Agartala. The "Kharchi" festival is typical of Tripura. It is a celebration for worship of the tutelary deity of the royal family of Tripura. Once prevalent only in the royal family, the worship of the Fourteen Gods has now turned into a festival of the general public in Tripura irrespective of caste or creed. It is a week-long celebration held in the temple premises. The word Kharchi is said to be a corrupt form of Khya which means earth. Kharchi Puja is, therefore, the worship of the earth that sustains mankind with all her resources.

16

गुजरात की बौद्ध धर्म विरासत

अहिंसा और विश्वबंधुत्व की भावना को व्यक्त कर रही है गुजरात की बौद्ध धर्म विरासत। उसे हमने झाँकी के स्वरूप में अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया है।

झाँकी के अग्रभाग में बौद्धों का संघ चल रहा है। ट्रैक्टर के अग्रभाग में 'देवनी मोरी' से प्राप्त भगवान बुद्ध की प्राचीन प्रतिमा को प्रस्थापित किया गया है। तल भाग में बौद्ध धर्म के पवित्र मुद्रा चिन्ह है और साइड में जोगीडा की गुफा की बुद्धा पैनल है। ट्रॉली पर वडनगर का इंटेरी विहार, जिसमें से भगवान बुद्ध के शरीर अवशेष प्राप्त हुए हैं वह पत्थर की मंजूषा और स्वर्णपात्र, अशोक की शिलालेख, पद्मपाणि और वज्रपाणि के शिल्प और बौद्ध के शिल्प हैं।

समग्र झाँकी 'बुद्धं शरणं गच्छामि' की धुन के साथ संलग्न की गई है।

Buddhist Heritage in Gujarat

Gujarat's Buddhist heritage is articulating non-violence and universal brotherhood. We have tried to express it through the tableau.

In front of the tableau, a group of monks are walking. An old sculpture of Buddha, found in Devnimori is placed on the front face of the tractor. Buddhist Mudras (symbols) found in Vadnagar have been sculpted beneath the sculpture and by its side, there is the Buddha Panel of Jogida's cave. On the trolley, there are the sculptures of Interi Vihar (made of moulded bricks) found in Vadnagar, a casket found in Devnimori - the holy urn that contains a small quantity of ashes of Lord Buddha, a stone edict of King Ashok and the sculptures of *Padmapani, Vrajpani* and also the Buddha.

The tableau is accompanied by the tune, 'Buddham Sharnam Gachhami.'

गुजरात ***Gujarat***

17

पकड़नट्टम (कथकली और मोहिनीअट्टम का मिश्रण)

पकड़नट्टम केरल के दो शास्त्रीय अभिनय कला रूपों अर्थात् कथकली और मोहिनीअट्टम के संगम की आधुनिक प्रस्तुति है। कथकली उच्चकोटि की शैली वाली शास्त्रीय नृत्य नाटिका है जो चरित्रों के मनोहारी एवं आकर्षण तथा रंगीन रूप–सज्जा और व्यापक भाव भंगिमा के लिए उल्लेखनीय है। मोहिनीअट्टम की मुख्य विशेषता सामान्य हस्त भंगिमाओं एवं शारीकि अभिनय के माध्यम से गीतों के तात्पर्य की संगीतमय व्याख्या है। पकड़नट्टम में कथकली की राजसी, भारी भरकम साज–सज्जा और मोहिनीअट्टम के सहज सौंदर्य का निपुण एवं विशुद्ध संमिश्रण किया गया है जिसे झांकी के पिछले हिस्से में दर्शाया गया है।

तिरानोट्टम कथकली की एक विशेषता है जिसमें चरित्र कथकली प्रस्तुति के आरम्भ में शानदार तरीके से प्रवेश करता है। यह काफी नाटयपूर्ण होता है और दर्शकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है। मनमोहक तिरानोट्टम झांकी के टैक्टर वाले हिस्से में प्रदर्शित किया गया है।

Pakarnattom (Combination of Kathakali and Mohiniyattom)

Pakarnattom is a modern formulation of the combination of two classical performing art forms of Kerala i.e Kathakali and Mohiniyattom. Kathakali, is a highly stylized classical dance-drama noted for the attractive and colourful make-up of characters and detailed gestures. The main feature of Mohiniyattom is the rhythmic interpretation of the meaning of songs with simple hand gestures and body actions. The majestic paraphernalia of Kathakali and simple beauty of Mohiniyattom are perfectly blended in Pakarnattom, presented in the trailer portion of the Tableau.

Thiranottam is a feature in Kathakali where the character makes a grand entrance at the beginning of a Kathakali performance. This is very dramatic and is performed to capture the attention of the spectators. The captivating Thiranottam is featured in the Tractor portion of the Tableau.

केरल ***Kerala***

बिदरी हस्तकला

बिदरी हस्तकला भारत का एक अत्यन्त ही जटिल, ललित और विदेशज हस्तकला है। इसकी शुरूआत उत्तर कर्नाटक के बिदरी नाम के स्थान पर हुई थी इसमें विशेष बात यह है कि यह मानवीय कारीगरी और हुनर की बेहतरीन मिसाल है। सर्वप्रथम यह एक पर्सियिन कलाकार अब्दुल्ला–बिन–कौसर के द्वारा बनाया गया था। कहा जाता है कि अब्दुल्ला–बिन–कौसर को 14 वीं शताब्दी में सुल्तान अहमद शाह वली द्वारा राज महलों और राजदरबारों को सजाने वाले मजदूरों के साथ बुलाया गया था। सुलतान अब्दुल्ला की दुर्लभ कलाकृतियों से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने स्थानीय कारीगरों को उनके द्वारा प्रशिक्षण दिलवाना शुरू कर दिया। वह महमूद गवन मदरसा जिसमें कभी अब्दुल्ला प्रशिक्षण दिया करते थे आज भी मौजूद है और पीढ़ी–दर–पीढ़ी उस दुर्लभ कला कौशल को बरकरार रखे हुए है।

बिदरी के धातु हस्तशिल्प में सोने और चांदी के उत्तम डिजाइनों के रूपांकन के लिए तांबे या इस्पात के आधार में ढाला जाता है लेकिन आधुनिक समय में सबसे प्रचलित विधि यह है कि जस्ते के साथ एक गहरा काला रंग प्रदान करने वाली सामग्री और तांबे के मिश्रण से धातु को तैयार किया जाता है। ढांचा एक विशेष प्रकार की मिट्टी से तैयार किया जाता है जो मुख्यतः बीदर किले के आंतरिक हिस्से से इकट्ठा की जाती है।

Bidriware

Bidriware is one of the most intricate, exquisite, delicate and exotic handicrafts of India. Originating in Bidar in North Karnataka, it is the finest example of human workmanship and skills. It was introduced by a Persian artisan Abdullah-bin-kaiser, one of the highly skilled workers brought from Iran by Sultan Ahmed Shah Wali Bahmani in the 14th Century for decorating royal palaces and courts. Fascinated and enamoured by Abdullah's rare and unique craftsmanship, the Sultan arranged for the training of local craftsmen in the Mahmud Gawan Madrasa, which has survived till date.

The craftsmanship involved in Bidriware requires inlaying of gold and silver in delicate, intricate and exquisite designs and motifs on a copper or steel base for casting. But the most common method in vogue in modern times envisages an alloy of zinc and copper as the base metal, with the zinc content imparting a deep black colour. The mould is formed using a special type of virgin soil- collected mainly from the inner areas of Bidar Fort.

कर्नाटक ***Karnataka***

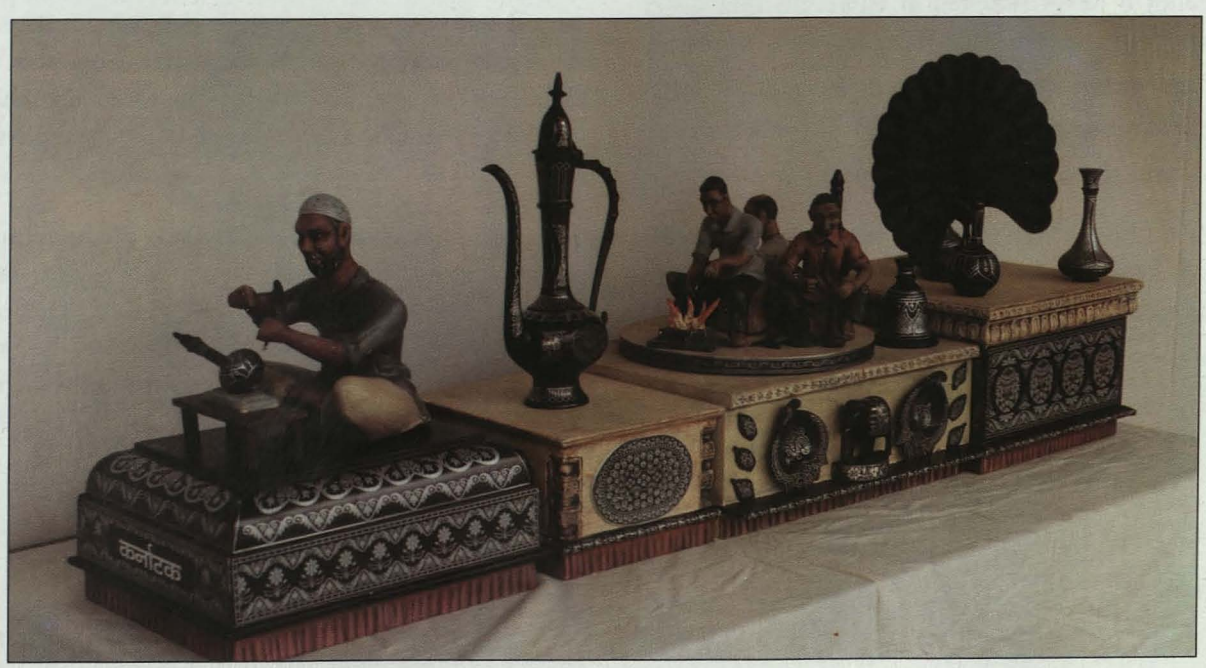

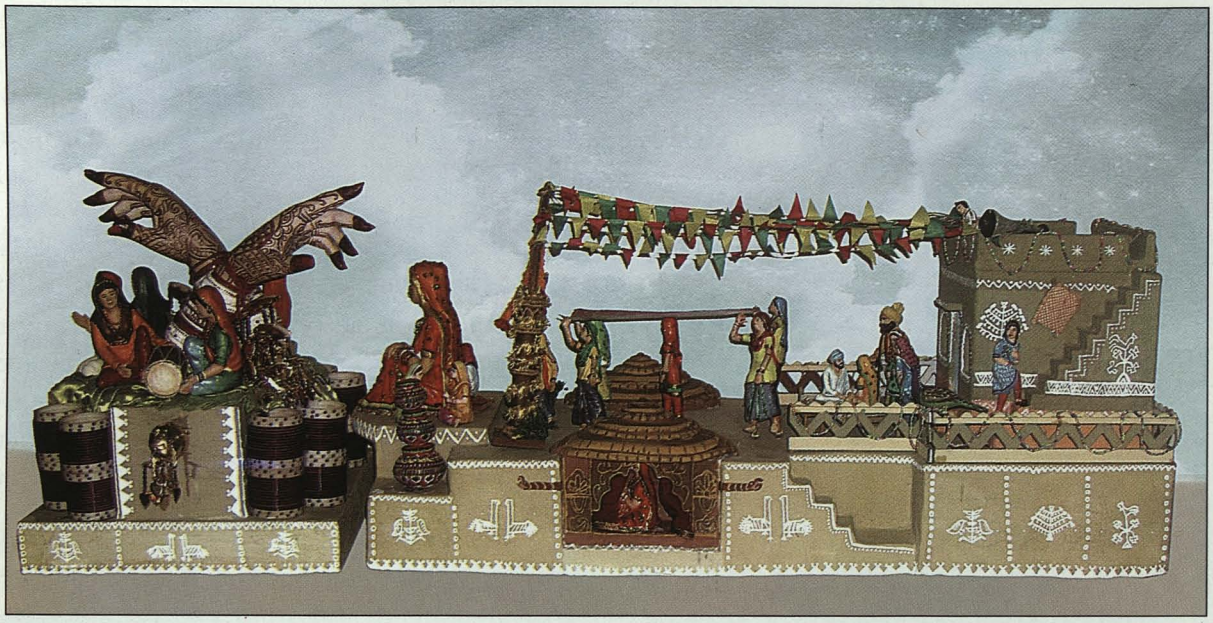

मेहंदी शगना दी

पारंपरिक पंजाबी शादी का उल्लास जो अर्द्ध–शहरी पंजाबी घरों में मनाया जाता है, जीवंत रूप से मेहंदी 'रस्म' में सामने आता है जिसमें महिलाओं के लोकसंगीत द्वारा दुल्हन के साथ छेड़छाड़ व लाड़–प्यार किया जाता है और साथ ही दुल्हन को सजाया भी जाता है। पारंपरिक पंजाबी संस्कृति और दुल्हन को सजाने के जरूरी हिस्से के तौर पर, 'मेहंदी' उत्सव–उमंग और खुशियों का दूसरा नाम है।

ट्रैक्टर वाले हिस्से पर मेहंदी या पारपंरिक 'हिना' से सजे दुल्हन के हाथों की विशाल प्रस्तुति ये सब चीजें बयान करती है, जबकि ट्रेलर में दुल्हन के घर में शादी की रस्म के अलग–अलग मौकों का संयोजन, शादी के विषय को काफी अच्छे ढंग से संपूर्णता देता है।

Mehendi Shagana Di

The exuberance of traditional Punjabi Marriage as it is celebrated in the semi -urban Punjabi households, comes alive in the *Mehendi 'Ceremony'* where the bride is teased and pampered by women-folk who at the same time play an active part in the bridal adornment. The 'Mehendi ', an essential part of traditional Punjabi culture and bridal decoration, is synonymous with festivities and joy.

The larger than life portrayal of the bridal hands adorned with Mehendi or the traditional 'henna' on the tractor portion says it all, while the amalgamation of various stages of the marriage ceremony in the bride's household on the trailer, aptly complements the marriage theme.

20

बिहार की सूफी परम्परा

बिहार में सूफी परम्परा का एक गौरवशाली एवं उत्कृष्ट इतिहास रहा है। सूफियों का "वही सब कुछ हैं (हमा औस्त)" की अवधारणा में गहरी आस्था है तथा वे इस धर्म को एक दार्शनिक अंदाज देने में भी अग्रणी हैं।

पटना से पश्चिम में अवस्थित मनेर शरीफ बिहार में सूफी परंपरा से जुड़ा सबसे प्रसिद्ध स्थान है, जहाँ मशहूर सूफी संत शेख याहया मनेरी का मकबरा है। मनेर शरीफ स्थित अद्‌भुत स्मारक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अधीन संरक्षित है। इस स्मारक की दीवारों पर जटिल बनावट बनी हुई है जो मुगल स्थापत्य कला का उत्कृष्ट नमूना है।

विभिन्न धर्मों एवं आस्थाओं से जुड़े लोग इस मज़ार पर चादर चढ़ाने आते हैं, और सूफ़ी संगीत परम्परा की कव्वाली का आनन्द उठाते हैं, जो सभी धर्मावलम्बियों के बीच मानवता एवं एकता की भावना फैलाते हैं।

बिहार की झांकी राज्य में सूफ़ियों की समृद्ध एवं गौरवशाली परंपरा को दर्शाती है।

Sufi Tradition in Bihar

Sufism has a rich tradition and a glorious history in Bihar. Sufis had a deep faith in the concept of "Everything is He – (Hama Oast)" and were the pioneers to give the religion a philosophical tinge.

Maner Sharif - west of Patna, is the most famous place associated with Sufism in Bihar and houses the tomb of illustrious Sufi saint Sheikh Yahia Maneri. The marvelous monument at Maner Sharif is protected by Archeological Survey of India (ASI). The walls are adorned with intricate designs and symbolize the architectural richness of the Mughal era.

Devotees belonging to different religions and faiths throng here to offer "Chadar" on the "Mazar" of the illustrious Sufi saint Sheikh Yahia Maneri, and also enjoy "Qwalis" from the Sufi Musical Cult that spreads humanity and unity amongst all faiths.

The tableau of Bihar depicts the rich and glorious Sufi tradition of the state.

बिहार ***Bihar***

गुटुर छाम / गुटुर नृत्य

सिक्किम के भोटिया और लेप्चा समुदायों के अपना पारम्परिक वार्षिक, धार्मिक उत्सव गुटुर छाम, नामसुङ (Namsoong), लोसुङ (Lossong), सिक्किम की सांस्कृतिक परम्परा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। प्रत्येक नव वर्ष के इस पावन पर्व में गुटुर नृत्य का आयोजन किया जाता है। इसे सिक्किम के ऐतिहासिक बौद्ध मन्दिरों (गुम्बा) के प्रमुख स्थल रूम्तेक, रालाङ, इञचे, फूदोङग आदि मे लोसी कुरिन अथवा वार्षिक महोत्सव के रूप में किया जाता है। इस धार्मिक सप्ताहव्यापी उत्सव के दौरान देवी–देवताओं की आराधना की जाती है। प्रेत आत्मा, हिंसा, युद्ध, तनाव और प्राकृतिक दुर्दशा तथा बीमारियों जैसे सामाजिक दुरावस्था से छुटकारा पाने के लिए इस धार्मिक कृत्य में पूजा–अर्चना की जाती है। इस पूजा के अवसर पर बौद्ध धर्मी लोग अपनी सामर्थ्यानुसार दान–पुण्य करते हैं जिसको टोर्चन (Torchan) का दान कहते हैं। इस पावन अवसर पर विभिन्न देवी–देवताओं की मूतियाँ उनसे संबंधित मन्दिरों में धर्म चक्र के अनुसार बनायी जाती हैं। हिसे गोम्पु, सिन्दोंगमा, गुरू ड्रागमर, सिंगी ड्रेगजोङ और काग्युद, ये धर्माधिकारी काग्युए निङमा, शाक्य एवं गेलुग के आधार पर इसे तैयार करते हैं।

सप्ताहभर की पूजा के अन्तिम दिन एक महत्वपूर्ण नृत्य का आयोजन किया जाता है जिस में सभी नृत्य कलाकार (लामा) मुखौटा (Mask) पहनकर प्राङगण में आकर नृत्य प्रस्तुत करते हैं। पूजा 'टोर्चन' को जलाये जाने के बाद समाप्त होती है। 'टोर्चन' को जलाना दुष्ट आत्माओं को जलाने का सूचक होता है। दुष्ट आत्मा जो धरती के अन्दर छुपी होती है उन्हे भी सिनियन विधि से दुष्ट आत्माओं का पुतला बनाकर तिकोने गढ्ढे में गाड़ दिया जाता है।

दूसरे दिन गुटुर महोत्सव का (Tang Rag) पवित्र प्रसाद अर्पण किया जाता है। इस दौरान जितने भी देवी–देवताओं की उपासना की गई हैं उनसे पावन–अनुकम्पा की श्रद्धापूर्वक कामना की जाती है।

Gutor Cham/Gutor Dance

Sikkim's Bhutia and Lepcha communities celebrate their traditional annual religious festivals Losoong and Namsoong. On the eve of the new year, Gutor Dance is organised. Losoong and Namsoong are preceded by Gutor. It is performed in major monasteries like Rumtek, Ralang, Enchey and phondong as Loshi Kurim or an annual ceremonial rite. Which lasts for seven days invoking the deities, seeking their help in destroying and killing the evils that bring disturbances, war diseases, etc. During the ceremony, sacrificial objects called Torchan, the effigies of different deities viz. Yeshey Gompu, Sendongma, Guru Dragmar, Shinije Drekjom, and Kagyed etc, are prepared in their respective monasteries in accordance with the dharma order (dharma schools such as Kagyu, Nyingma, Sakya and Gelug).

The last day of the rite is the externalization of the prayers in the form of mask dance. The ceremony dance conclude with burning of Torchan, signifying burning of all evil forces. Evils, which are supposed to live underground, are also buried through simian rites where an effigy of the devil (Linga) is buried inside the triangular pit.

Next day, the ceremony is closed with offering of Tang-Rag, in which special thanks giving prayers are offered to the invoked deities.

22

सांस्कृतिक व धार्मिक सौहार्द

दिल्ली की यह झांकी, दिल्ली के सांस्कृतिक व धार्मिक सौहार्द के अनगिनत रंग पेश करती है। पूरी झांकी की खूबसूरती को, बहाई मंदिर की प्रस्तुति बेहद बढ़ा देती है, जबकि साथ ही झांकी के बगल के हिस्से चार प्रमुख धार्मिक समुदायों के मिलजुलकर साथ–साथ रहने को दर्शाते हैं। दूसरी ओर, ट्रेलर एक ऐतिहासिक शहर की पृष्ठभूमि में सांस्कृतिक विरासत को सामने लाता है। इससे एक ऐसे शहर का अहसास होता है जिसका कला, संस्कृति, धार्मिक सौहार्द का एक लंबा इतिहास रहा है और उसमें उत्सव मनाने का जोश व उमंग मौजूद है।

पुराने किले की पृष्ठभूमि में तीन नृत्यांगनाओं द्वारा शास्त्रीय कत्थक संगीत का अर्थ पारंपरिक रूप से समृद्ध, आपस में घुले–मिले आम लोगों के अहसास को पूरा करने के लिए, और सामूहिक रूप से एक शहर में संपूर्ण राष्ट्र की आबादी के विभिन्न हिस्सों के बीच मौजूद सांस्कृतिक एकता और धार्मिक सौहार्द का नमूना प्रस्तुत करने के लिए है।

दिल्ली

Cultural and Religious Harmony

The tableau for Delhi, presents the myriad hues of Delhi's cultural and religious harmony. The depiction of the Bahai temple, adds to the aesthetics of the whole tableau, while at the same time the side portions of the tableau represent the co-existence of four major religious communities together. The trailer, on the other hand, seeks to portray a cultural heritage against the backdrop of a historical city. The feel is that of a city with a long history of art, culture, religious harmony, and the spirit of festivity.

The Classical Kathak Music with three dancers depicted against the backdrop of Old Fort , is meant to complement the feel of a traditionally rich, inter-mixed populace, and collectively the model too, seeks to represent the cultural integration and religious harmony of population segments of the whole nation in one city.

Delhi

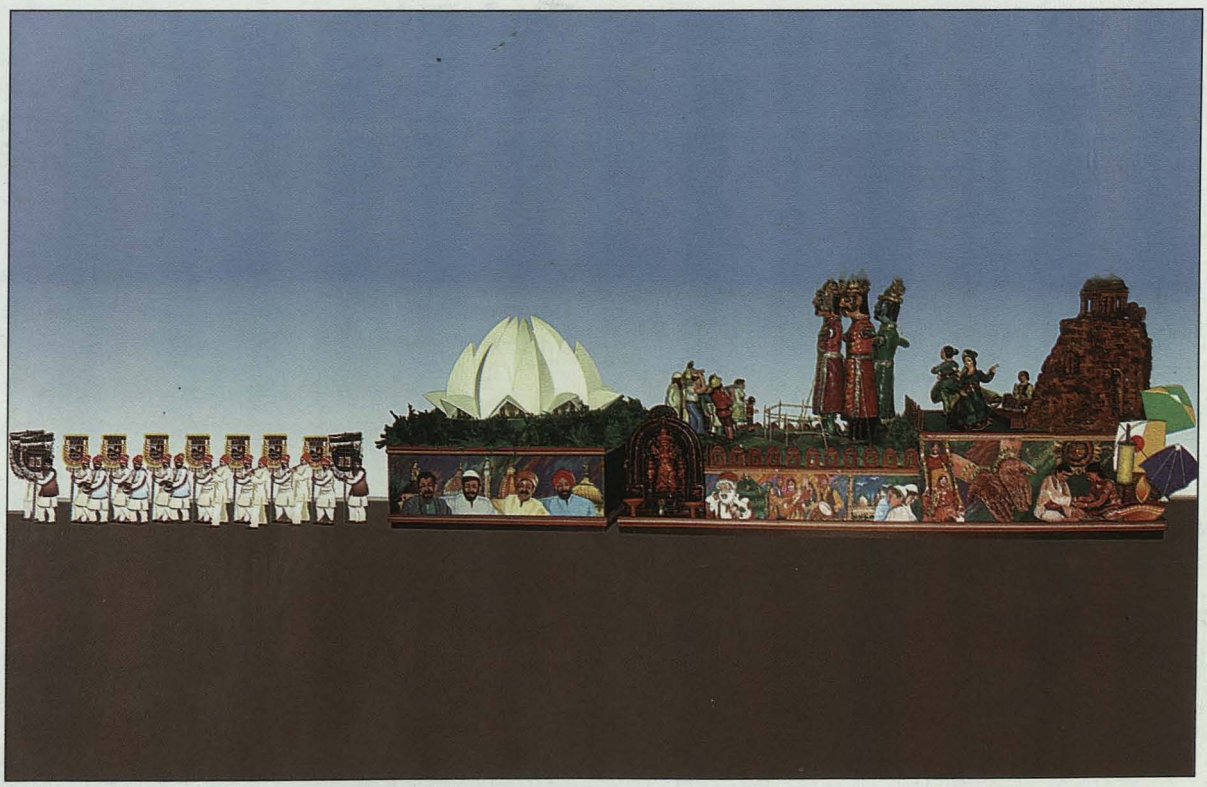

23

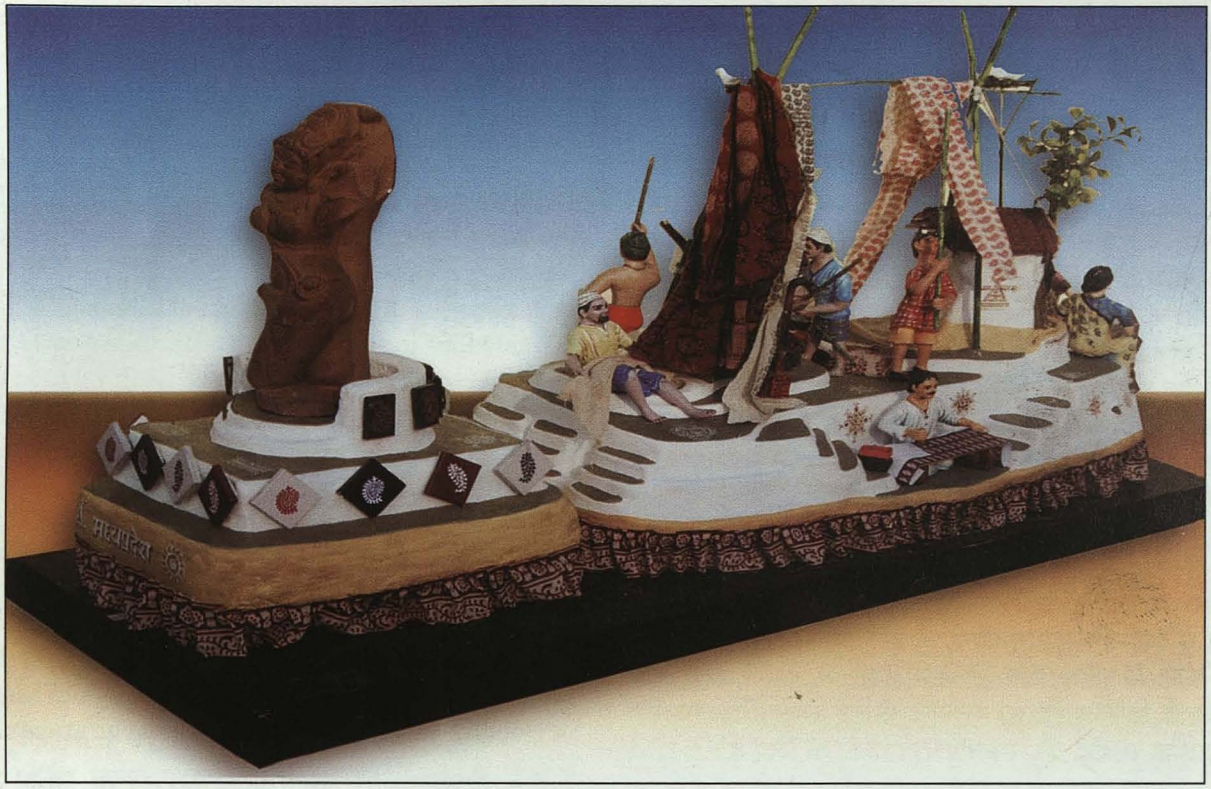

बाघ के छापे

मध्यप्रदेश की बाघ छापाकला, लकड़ी के छापों से कपड़े पर होने वाली छपाई परम्परा की कड़ी है। मध्यप्रदेश में वस्त्रों की बुनाई और छापे की परम्परा सदियों पुरानी है।

रंगों के प्रयोग से बने बाघ के वस्त्र अपनी सारी अभिव्यक्ति में अद्‌भुत रचना होते हैं। वस्त्रों पर रंगों की यह चमक और कहीं संभव नहीं होती। यह इस क्षेत्र की विशेष रासायनिक प्रकृति के कारण होता है।

ज्यामितीय रूपाकार और रंगों का अद्‌भुत प्रयोग बाघ की वस्त्र छपाई और मध्यप्रदेश को विशेष पहचान देता है।

Bagh Prints

Bagh Prints of Madhya Pradesh, represent one of the most ancient traditions of wooden block printing on clothes.

The use of colours creates a wondrous effect which is impossible to get anywhere else. This is possible only because of the chemical properties of the area.

Geometric designs and imaginative use of colours give Bagh Prints a distinct identity.

भाण्ड पाथेर

जम्मू एवं कश्मीर की स्वर्ग के समान खूबसूरत वादियों को देखने से यह विश्वास पुख्ता हो जाता है कि स्वर्ग कुछ और नहीं वास्तव में धरती पर ही एक जगह है। प्रकृति को उसके सर्वोत्तम रूप में चित्रित करने वाला यह राज्य जम्मू एवं कश्मीर की मनमोहक कलाओं के लिए भी मशहूर है। भांड पाथेर एक ऐसा ही विशिष्ट लोक नाट्य है जिसमें राज्य का सांस्कृतिक धमाल पेश किया जाता है। भांड पाथेर एक प्राचीन एवं पारम्पारिक सांस्कृतिक सांध्य कार्यकम है जिसे मूल रूप से कश्मीर घाटी में आयोजित किया जाता है। यह संगीत धमाल किसी खास विषय–वस्तु पर आधारित होता है जो आमतौर पर एक तरह का व्यंग्य होता है अथवा जिसमें हास्य एवं चातुर्य का भरपूर मिश्रण होता है। गीत, नृत्य और नाटक का सुन्दर मिश्रण इसे आकर्षक लोक नाट्य का रूप प्रदान करता है। व्यंग्य विडम्बनाओं से भरे होते हैं और उनमें अक्सर बुराई के उपर अच्छाई की जीत का चित्रण होता है। शैतान के समाप्त होते ही वातावरण खुशी एवं आनन्द से भर जाता है ओर लोग मदमस्त होकर आनन्दोत्सव मनाते हुए अच्छाई की जीत का इज़हार करते हैं।

जम्मू एवं कश्मीर

Bhand Pather

A visit to the beautiful paradise of Jammu and Kashmir brings home the fact that heaven is indeed a place on earth. The state that portrays nature at its best is also famed for the spectacular Jammu and Kashmir performing arts. Bhand Pather is one such typical folk theater that holds up the cultural extravaganza of the state. Bhand Pather is an archetypal and traditional cultural soiree that is performed primarily in the Kashmir Valley. The musical extravaganza is based on a central theme that is usually a satire or laced with wit and humour. A beautiful blend of song, dance and drama makes up this fascinating folk theater. The satires are full of irony and more often than not depict the triumph of the good over the evil. As the diabolic is vanquished, a lot of mirth and merriment fills the air and people celebrate the victory of the good by immersing themselves in loads of revelry.

Jammu and Kashmir

25

बाघ संरक्षा

इस वर्ष केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग की यह फूलों की झांकी यह आह्वान करती है कि हम बाघों को बचाएँ और धरती की रक्षा करें।

झाँकी के प्रथम भाग में बाघ शावकों को जंगल और प्राकृतिक संसाधनों के बीच मौज–मस्ती करते और खेलते हुए दर्शाया गया है। झांकी के शुरूआती भाग मे इसे दिखाया गया है। झांकी के पिछले भाग में चट्टानों पर बैठे बाघ अपनी जंगल के राजा की शान को दर्शा रहे हैं और प्रकृति का आनंद ले रहे है।

यह झांकी प्राकृतिक फूलों के विभिन्न रंगों को प्रदर्शित कर रही है।

Save Tigers

This year Central Public Works Department Floral Tableau depicts the need to save the tiger and thus save our earth.

The first half of the Tableau shows tiger kids playing and enjoying the natural habitats, forest and natural grassland shown in the front part of the trailor. The rear part of the trailor shows a pair of tigers sitting on a rock in its full wild majesty in its natural beauty.

The tableau is crafted in flowers in their natural colours.

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एन.डी.एम.ए) की झांकी में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा राहत केंद्रित प्रणाली के स्थान पर आपदा–पूर्व तैयारी और प्रशमन उपायों को सुदृढ़ करने तथा किसी रासायनिक आपदा होने की स्थिति में राष्ट्रीय आपदा कार्रवाई बल (एन.डी.आर.एफ) की सहायता से तुरंत और कुशल कार्रवाई का समन्वयन करने पर विशेष ध्यान दिया गया है। इस प्रकार झांकी का मुख्य उद्देश्य (एन.डी. एम.ए) द्वारा सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए एक सुव्यवस्थित, सफल, बहु–आयामी और बहु–विषयक कार्रवाई को दर्शाना है जिसके माध्यम से सभी भागीदार अभिकरणों के सहयोग से देश में किसी भी रासायनिक आपदा को घटित होने से रोकना है। आज राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एन.डी.एम.ए) इस प्रकार की दुर्घटनाओं/आपदाओं से समन्वित और सशक्त तरीके से निपटने के लिये पूरी तरह लैस और प्रशिक्षित है।

National Disaster Management Authority

The Tableau of National Disaster Management Authority (NDMA) depicts the paradigm shift in NDMA's focus from relief centric regime to strengthening pre-disaster, preparedness and mitigation measures and coordinating prompt and efficient emergency response with the assistance of National Disaster Response Force (NDRF) in case of Chemical Disaster. The underlying theme of the Tableau is to depict proactive, participatory, well structured, fail safe, multi disciplinary and multi-sectoral approach of NDMA involving all stakeholders in preventing occurrence of the Chemical Disasters in the country and prompt response, rescue and relief action, in case it occurs. Today NDMA is well equipped and trained to deal with such accidents/disasters in a coordinated and efficient manner.

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

National Disaster Management Authority

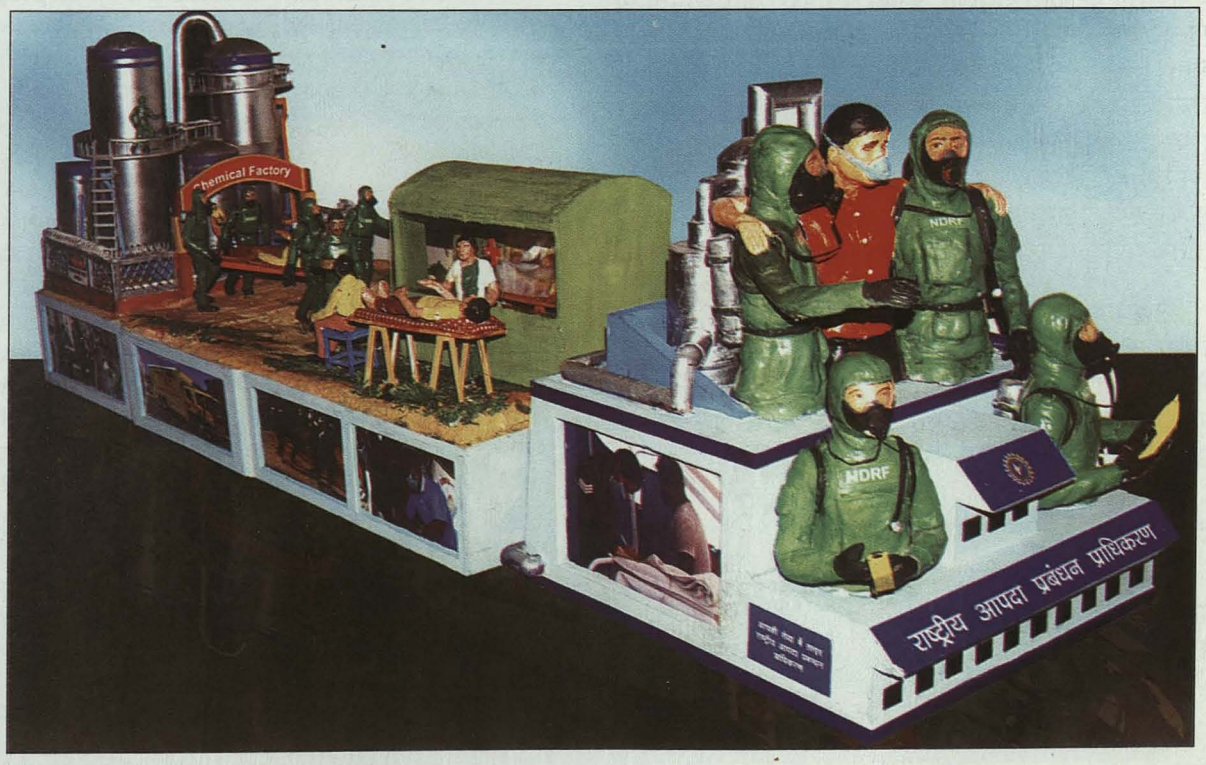

27

पर्यावरण एवं सतत आजीविका

"पर्यावरण एवं सतत आजीविका" की इस झांकी में जैवविविधता के गहन संतुलन, समृद्ध पर्यावरण और आदमी के भरण–पोषण को दिखाया गया है । पर्यावरण की जैवविविधता एक बार बिगड़ जाने पर, न तो बदली जा सकती है और न ही इसे वापस लाया जा सकता है। इसमें हमारी राष्ट्रीय धरोहर पशु 'हाथी' को विभिन्न प्रकार के जानवरों जैसे बाघ, सांभर, हिरण, अजगर, मेढ़क, घोंघा, बड़े आकार वाले मशरूम, टिड्डा और कैटरपिलर के साथ दर्शाया गया है। ये पहाड़ एवं झरने के प्राकृतिक परिदृश्य में एक संतुलित पारि–प्रणाली के प्रतीक हैं।

जैवविविधता को प्राकृतिक संसाधनों के केवल संपुषित उपयोग से ही संरक्षित रखा जा सकता है। इसलिए ट्रेलर यूनिट के अंत में बांस का जंगल दिखाया गया है, जो मानव जीवन के लिए आश्रय और अन्य घरेलू उपयोगों हेतु वृक्षों के महत्व को दर्शाता है । वनों पर आश्रित जनों की जीवन शैली को वन उत्पाद एकत्र करते हुए कुछ लोगों और पालतू जानवरों के साथ दर्शाया गया है ।

यह झांकी संदेश देती है कि हमें प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते समय जैवविविधता का सम्मान एवं संरक्षण करना चाहिए।

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय

Environment and Sustainable Livelihood

The Tableau on **"ENVIRONMENT AND SUSTAINABLE LIVELIHOOD"** displays the intricate balance of the biodiversity, rich environment and human sustenance. Biodiversity of environment, once damaged, cannot be replaced or reversed. This is represented by our National Heritage Animal 'The Elephant' which is shown along with a diversity of animals such as Tiger, Sambhar, Deer, Python Frogs, Snail and Large Size Mushroom, Grasshopper and Caterpillar. These symbolize a balanced eco-system in a natural landscape of mountain and a waterfall.

Only a sustainable use of natural resources can preserve biodiversity. Therefore, towards the end of the Trailer Unit a bamboo plantation is displayed signifying the importance of plants for human life as shelter and other domestic uses. Forest dependent people are displayed by colony of human hutments with some human figure collecting forest produce along with domestic animals.

The Tableau tells us that we should respect and preserve biodiversity while using natural resources.

Ministry of Environment & Forest

25

जैनरिक से जीनोमिक दवा तक

इस झांकी में 'सस्ती स्वास्थ्य सुरक्षा' क्षेत्र में वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद के प्रौद्योगिकीय योगदानों की विशेष झलक प्रस्तुत की गई है। इस झांकी में आत्मनिर्भरता और इस क्षेत्र विशेष में प्रौद्योगिकीय अवसर सृजन पर केन्द्रित सीएसआईआर के नवोन्मेषी अनुसंधान एवं विकास योगदानों को दर्शाया गया है, परिणामस्वरूप न केवल जैनरिक दवा उद्योग का निर्माण हुआ है अपितु देश में नई दवा के विकास कार्य में भी तेजी आई है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सीएसआईआर को देश में विकसित 17 नई दवाओं में से 13 दवाओं और अनेक नई दवा कैंडीडेट्स के विकास का श्रेय जाता है। सीएसआईआर ने अब जीनोमिकी के क्षेत्र में बेजोड़ विशेषज्ञता हासिल कर ली है और इस क्षेत्र में इसके अनुसंधान एवं विकास प्रयासों से किसी रोगी की आनुवंशिक रचना के आधार पर प्रामुक्तिपरक दवा का विकास संभव हो पाया है।

यह झांकी विश्व के लिए सस्ती स्वास्थ्य सुरक्षा उपलब्ध कराने के लिए राष्ट्रीय क्षमता निर्माण में ज्ञान–सघन समसामयिक अनुसंधान एवं विकास के महत्व का विशेष तौर पर उल्लेख करती है।

From Generic to Genomic Medicine

The tableau highlights the technological contributions of Council of Scientific & Industrial Research (CSIR) in the domain of 'Affordable Healthcare'. It captures the innovative R&D contributions of CSIR focused on self-reliance and creating technological niches leading to not only building up of generic drug industry but also catalyzing new drug development in the country. Post-Independence, CSIR has to its credit 13 out of 17 new drugs and several new drug candidates developed in the country. CSIR has now built unique expertise in genomics and its R&D efforts are leading to development of predictive medicine, based on genetic constitution of an individual patient.

The tableau conveys the importance of knowledge-intensive contemporary R&D in building national capacity to deliver affordable health care for the world.

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय

Ministry of Science & Technology

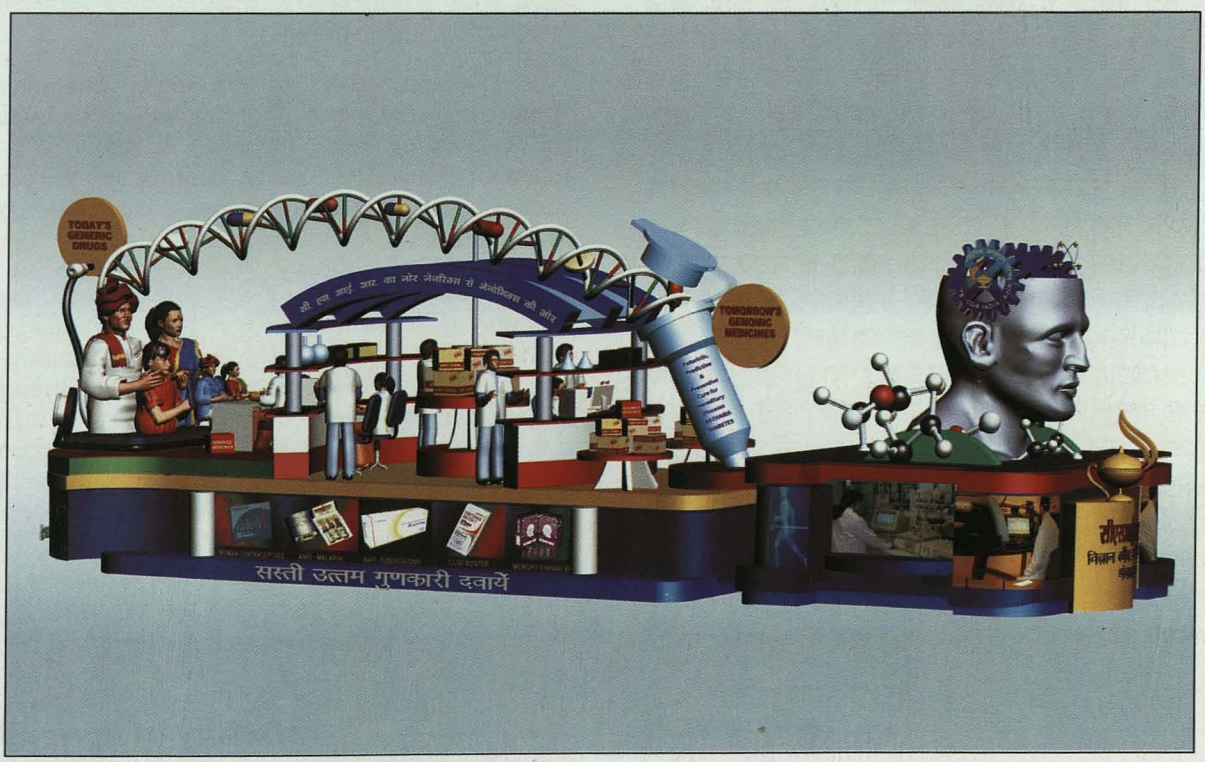

29

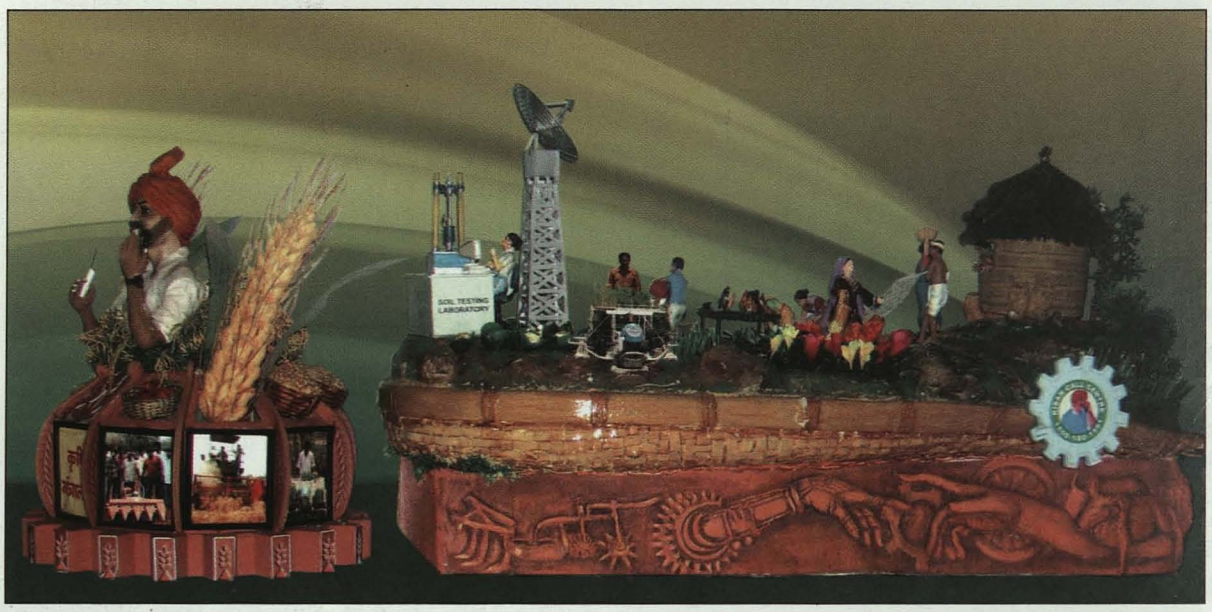

अत्याधुनिक व दीर्घकालिक कृषि

यह झाँकी सतत रूप से लाभकारी खेती को ध्यान में रखते हुए भारतीय किसानों द्वारा अपनाई जाने वाली नवीन प्रौद्योगिकियों को दर्शाती है। ट्रैक्टर वाला हिस्सा एक प्रगतिशील किसान का प्रतीक है, जो कृषि उत्पादों के बाहुल्य को भी दर्शाता है। वह किसान कॉल सेंटर से उपयुक्त सलाह प्राप्त करता रहता है और बेहतर उपयोग के लिए कीट निगरानी यंत्र जैसे उच्च प्रौद्योगिकी युक्त उपकरणों का इस्तेमाल कर सकता है। निचले हिस्से में बना प्रौद्योगिकी–पहिया कृषि क्षेत्र में पारम्परिकता के साथ आधुनिकता के समरसतापूर्ण सह–अस्तित्व को दर्शाता है।

ट्रैलर भाग के किनारे की पट्टी पर की गयी नक्काशी परम्परा और प्रौद्योगिकी के संगम को उजागर करती है। बाँस से बना सूप आज की भारतीय कृषि पद्धति के महत्त्वपूर्ण तत्व जैसे मिट्टी एवं बीज परीक्षण की आधुनिक सुविधाओं और उपग्रह आधारित फसल आंकलन को दर्शाता है।

धान रोपाई यंत्र, के अलावा, एसआरआई तकनीक पद्धति के मुख्य पहलुओं, जैसे उचित दूरी, हरी खाद और निराई करने को भी दर्शाया गया है। विभिन्न फसलों और पशुपालन को सम्मिलित करते हुए समेकित खेती (जल संरक्षण के सहयोजन) से किसानों को नियमित रूप से पर्याप्त आय प्राप्त होती है और जीव पारिस्थितिकी तंत्र के सहजीव सिद्धांत पर आधारित है। सुरूचिपूर्ण तरीके से बनाया गया अन्न भण्डार बाहुल्य और समृद्धि का प्रतीक है।

State-of-the-Art Sustainable Agriculture

This tableau depicts adoption of modern technologies by the farmer along with sustainability. The tractor portion symbolises a progressive farmer perched atop bountiful of agricultural goods. He gets advisories from Kisan Call Centre and can put high-tech tools such as pest surveillance device to good use. The technology wheel at the bottom draws the harmonious co-existence of modernity with tradition.

The side panel of the trailer has carvings highlighting confluence of technology with tradition. The winnowing plate made of bamboo culls out important elements of Indian farming system such as modern soil & seed testing facilities and satellite based crop estimation.

In addition to a Paddy Transplanter, salient features of System of Rice Intensification (SRI) Technique viz. proper spacing, green-manuring and weeding have been displayed. Integrated farming (in conjunction with water conservation) involving different crops and animal-husbandry gives substantial income to the farmer on a regular basis and works on symbiotic principles of ecology. The aesthetically designed granary epitomises resultant plenty & prosperity.

कृषि मंत्रालय ***Ministry of Agriculture***

30

निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009

झांकी, 1 अप्रैल, 2010 से लागू हुए ऐतिहासिक **निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम** के लागू होने को उत्सव के रूप में मनाते हुए निकाली जा रही है। ग्रामीण भारत में शिक्षा की अतिप्रिय समर्थक 'मीना' बच्चों को शिक्षा के जगत में आमंत्रित करती है, जिसे एक विशाल खुली पुस्तक और सुविधायुक्त कक्षा के रूप में दर्शाया गया है। इस कक्षा में क्रियाशीलता की गूंज है, रंग और ऊर्जा है तथा जीवन का उत्साह है। सर्व शिक्षा अभियान का सुपरिचित प्रतीक चिन्ह 'पेन्सिल' बच्चों की आशाओं और आकांक्षाओं की सीढ़ी है।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम में 'विद्यालय प्रबंध समितियों' के गठन के जरिये माता–पिता, अध्यापकों और निर्वाचित स्थानीय प्रतिनिधियों की सक्रिय भागीदारी की पर्याप्त व्यवस्था है। एक ऐसी समिति को 'शिक्षा के वृक्ष' की छाया में विद्यालय विकास योजना तैयार करते हुए दिखाया गया है।

समाज के सभी वर्गों के बच्चे विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने के बाल अधिकारों को उजागर करने वाले पटल लिए झांकी के साथ चल रहे हैं। विद्यालय भेद–भाव से मुक्त हैं जहां सभी बच्चों को लिंग, जाति अथवा समुदाय पर ध्यान दिए बिना, शिक्षा ग्रहण करने के समान अवसर प्रदान किए जाते हैं।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

Right of Children to Free and Compulsory Education Act, 2009

The tableau celebrates the enactment of the historic ***Right of Children to Free and Compulsory Education Act,*** which came into force on 1st April, 2010. 'Meena' the much loved champion of education in rural India invites children to the world of education, depicted by giant open book and a well-provided classroom - vibrant with activity, full of colour, and charged with energy and enthusiasm. The familiar 'Pencil' of the Sarva Shiksha Abhiyan logo is the ladder to children's hopes and aspirations.

The RTE Act provides for active involvement of parents, teachers and elected local representatives in the education process through the formation of *'School Management Committees'*. One such Committee, engaged in formulating a School Development Plan, is shown under the umbrella of the 'Tree of Education'.

Children from all sections of society walk with the tableau carrying placards, which highlight children's right to schools which are free of discrimination, where all children, irrespective of their gender, caste or community, are provided equal opportunities in the learning process.

Ministry of Human Resource Development

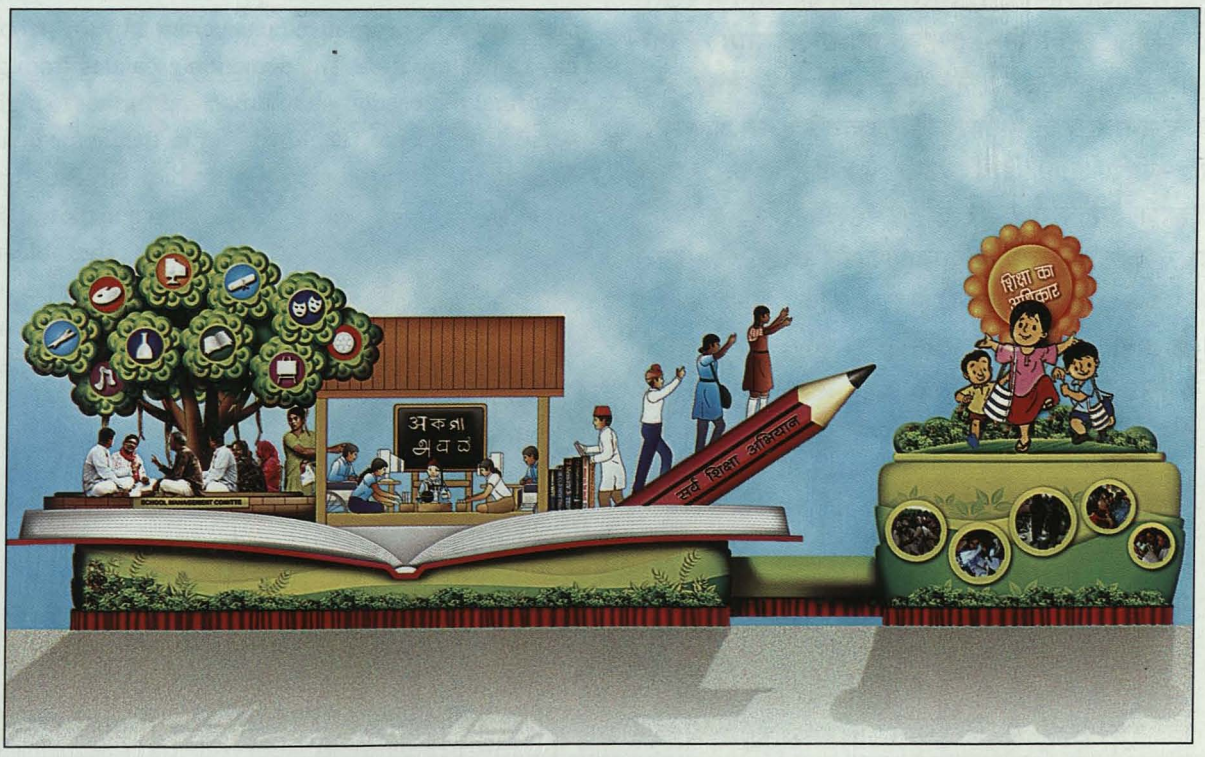

स्वस्थ जीवन – उच्च विचार

संपूर्ण झांकी लोगों द्वारा स्वस्थ जीवन को ध्यान में रखते हुए उठाये जाने वाले विभिन्न तरह के प्रयासों को सामने लाती है। दिमाग में स्वस्थ जीवन को थीम के तौर पर रखते हुए यह प्रस्तुति ज़मीनी स्तर के ग्रामीण प्रतिनिधित्व से शहरी और फिर वैश्विक नजरिए तक आगे बढ़ती है। झांकी का आदर्श प्रस्तुतिकरण ट्रैक्टर व ट्रेलर के पूरे हिस्से में सामंजस्यपूर्ण छवि रखने के साथ–साथ विविधतापूर्ण और समग्रता का दृश्य उपस्थित करता है। यह झांकी स्वस्थ आदतें और आचरण अपनाकर अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने और ऐसी चीजों से बचने के लिए लोगों को व्यापक तौर पर अपील करती है जो लोगों व समाज के समाज के सामान्य स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकती है।

Healthy Living – High Thinking

The whole tableau provides various types of measures to be taken in to consideration by the people to have a healthy life. The depiction escalates from grass root rural representation to urban and further to a global perspective keeping healthy living as the theme in mind. The model representation of the tableau has a harmonious look throughout the tractor and the trailer yet providing a varied and wholesome view. The tableau is a mass appeal to the people to take care of their health by adopting healthy habits and practices and to avoid substances that can harm the general health of people and the society.

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर को श्रद्धांजलि

महान रचनाकार तथा कला एवं संगीत जगत की महान हस्ती कविगुरू रवींद्रनाथ ठाकुर के 150वें जन्मोत्सव वर्ष पर एक द्वितीय विशेष झांकी में रेल मंत्रालय उनको श्रद्धापूर्वक स्मरण कर रहा है। रेलवे कविगुरू की कई यादगार काव्य रचनाओं की भी प्रेरक रही है। उनके सबसे विख्यात और कालजयी काव्य संकलन 'गीतांजलि' में भी इसकी झलक देखने को मिलती है। जीवन की विभिन्न प्रतिकृतियों को प्रायः गुरूदेव रवींद्रनाथ ठाकुर ने रेल यात्राओं के दौरान ही कलमबद्ध किया था।

रेलवे की झांकी, साहित्य के नोबेल पुरस्कार विजेता कविगुरू द्वारा बोलपुर से कोलकाता यात्रा के लिए उपयोग किए गए कोच की प्रतिकृति है। जिस वास्तविक कोच का उपयोग कविगुरू ने आखिरी बार किया था, उसको भारतीय रेल ने बोलपुर रेलवे स्टेशन पर संग्रहालय में सहेज कर रखा हुआ है। महान कलाकार, समाज सुधारक, देशभक्त और कवि के सम्मान स्वरूप भारतीय रेल उनकी कला और जीवन के विविध पक्षों एवं उनके द्वारा की गई रेल यात्राओं की स्मृतियों को आज गर्व के साथ झांकी के माध्यम से प्रस्तुत कर रही है।

रेल मंत्रालय

A Tribute to Gurudev Rabindranath Tagore

In the 150th year of the Birth centenary of Kaviguru Rabindranath Tagore, a special second tableau by the Ministry of Railways pays tribute to the doyen of art music and literature. The Railways inspired Kaviguru to pen many memorable poems which can be found in his masterpiece 'Geetanjali' his most famous collection of poems. Rabindranath Tagore often penned his reflections on life during his travels on train.

The Railways Tableau is a replica of the coach used by the Nobel Laureate for his travels for Bolpur to Kolkatta. Indian Railways has placed this very coach, as it was last used by Kaviguru, in a museum at Bolpur Railway Station. Today, as a mark of respect for the great artist, social reformer, patriot and poet, Indian Railways proudly presents his art and his life and relives his railway journeys through this tableau.

Ministry of Railways

33

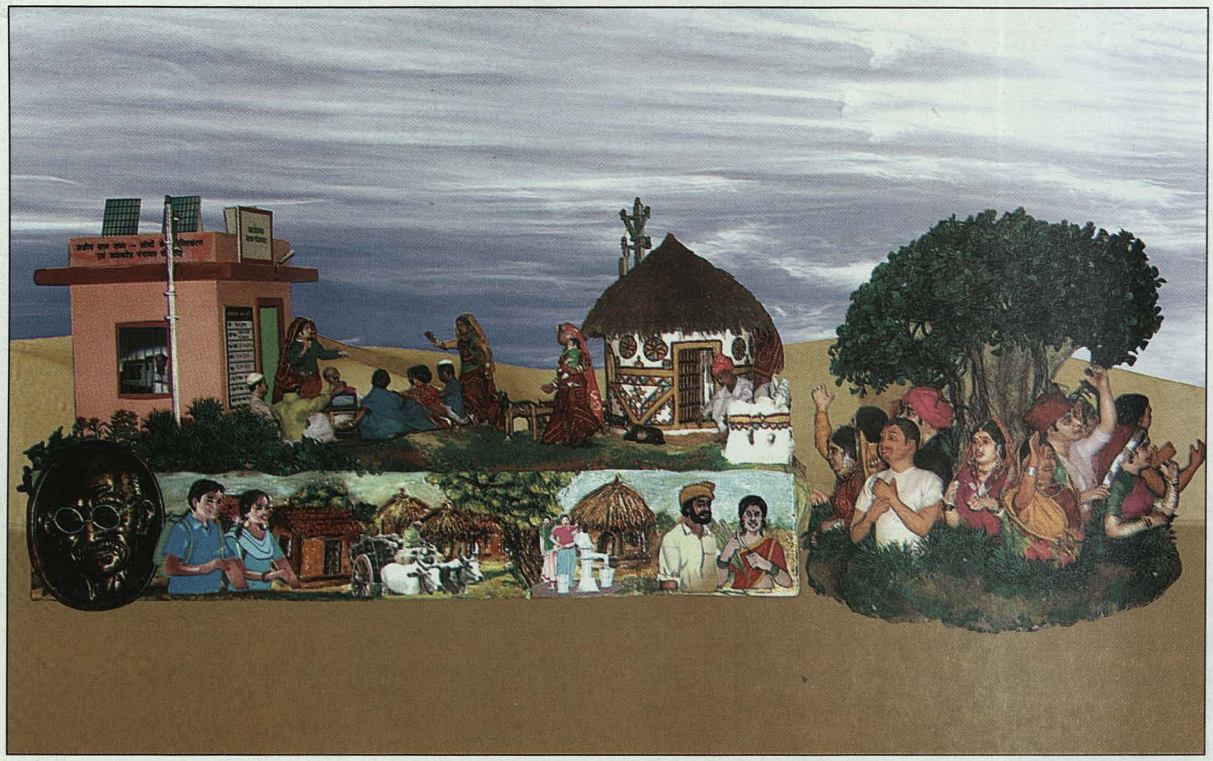

सशक्त लोगों और जवाबदेह पंचायतों के लिए ग्राम सभा

पंचायती राज मंत्रालय की झांकी में "सशक्त लोगों और जवाबदेह पंचायतों के लिए सक्रिय ग्राम सभा" का संदेश दिया गया है। ग्राम पंचायतों का कामकाज पारदर्शी, उत्तरदायित्वपूर्ण तथा वास्तव में अपनी सरकार जैसा हो इसके लिये ग्राम सभा का मूल मंत्र हैं। इस झांकी में ग्रामसभा के प्रभावशाली और सार्थक कार्यकलाप को दर्शाया गया है। ग्राम सभा एक ऐसा मंच है जिसके द्वारा प्रत्यक्ष और सहभागी गणतंत्र सुनिश्चित होता है। यह गरीबों, महिलाओं और उपेक्षित लोगों सहित सभी नागरिको को बराबर के अवसर देता है जिससे कि वे ग्राम पंचायत के कार्मिकों द्वारा तैयार किए गए प्रस्तावों की आलोचना कर सकें, उन्हें मंजूर अथवा नामंजूर कर सकें और पंचायत कर्मियों के कार्यो का मूल्यांकन भी कर सकें।

वट वृक्ष के नीचे ग्रामीण भारत की झांकी सहयोग और समरसता का प्रतीक है जिसे ग्राम सभा के विनम्र मार्ग दर्शन के तहत ग्रामीण समाज में देखा जा सकता है।

भित्ति चित्र के रूप में महात्मा गांधी को भी दिखाया गया है जो कि ग्राम स्वराज के प्रति उनके समर्पण को एक श्रद्धांजली है। उन्होने कहा था कि "मेरे विचार से ग्राम स्वराज एक पूर्ण लोकतंत्र है। गांव की स्थानीय सरकार को वे सभी अधिकार और न्यायिक शक्तियां प्राप्त होनी चाहिए जिसकी उन्हें आवश्यकता है। यह पंचायत अपने आप में सबकुछ होगी – विधायिका, न्यायपालिका और कार्यपालिका।"

पंचायती राज मंत्रालय

Active Gram Sabha for Empowered People and Accountable Panchayats

The tableau of Ministry of Panchayati Raj depicts the message to the people "**Active Gram Sabha - for Empowered People and Accountable Panchayats**". Gram Sabha is the key to true self-governance and transparent & accountable functioning of the Gram Panchayat. The tableau showcases effective and meaningful functioning of Gram Sabha which is the forum that ensures direct, participative democracy. It offers equal opportunity to all citizens including the poor, the women and the marginalized to discuss and criticize, approve or reject proposals of the Gram Panchayat (its executive) and also assess its performance.

The depiction of rural India under the Banyan tree symbolizes co-operation and harmony in the rural society under the benign guidance of the Gram Sabha.

The tableau also portrays the Father of the Nation in a mural form, as a tribute to his commitment to Gram Swaraj. He said "My idea of village Swaraj is that it is a complete republic. The government of the village has all the authority and jurisdiction required. This Panchayat will be the legislature, Judiciary and executive combined".

Ministry of Panchayati Raj

राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार 2010 के विजेता

नाम	राज्य
कु. जिस्मी पी.एम.*	केरल
मास्टर प्रियांशु जोशी**	उत्तराखंड
मास्टर विष्णुदास के***	केरल
मास्टर मुनीस खान***	मध्य प्रदेश
कु. इपी बसर***	अरुणाचल प्रदेश
कु. कल्पना सोनोवाल	असम
कु. रेखामोनी सोनोवाल	असम
मास्टर फ्रीडी नोन्गसीज	मेघालय
मास्टर राहुल कुरे	छत्तीसगढ़
मास्टर अनूप. एम	केरल
मास्टर मौ. नुरुल हुडा	मणिपुर
कु. पार्वती अमलेश	छत्तीसगढ़
मास्टर रोहित मारुति मलिक	महाराष्ट्र
मास्टर राज नारायणन	केरल
मास्टर उत्तम कुमार	उत्तर प्रदेश
मास्टर बिबेक शर्मा	सिक्किम
स्वर्गीय कु. श्रुति लोधी	उत्तराखंड
स्वर्गीय कु. चम्पा कंवर	राजस्थान
कु. लालमाविजुली	मिजोरम
मास्टर श्रवण कुमार	राजस्थान
मास्टर लवली स्टार के सोहपोह	मेघालय
मास्टर गुरजीवन सिंह	पंजाब
कु. सुनीता मुर्मू	पश्चिम बंगाल

* गीता चोपड़ा पुरस्कार

** संजय चोपड़ा पुरस्कार

*** बापू गैधानी पुरस्कार

Winners of the National Award for Bravery – 2010

Name	State
Km. Jismi P.M.*	Kerala
Master Priyanshu Joshi**	Uttarakhand
Master Vishnudas. K***	Kerala
Master Moonis Khan***	Madhya Pradesh
Km. Ipi Basar***	Arunachal Pradesh
Km. Kalpana Sonowal	Assam
Km. Rekhamoni Sonowal	Assam
Master Freedy Nongsiej.	Meghalaya
Master Rahul Kurrey	Chattisgarh
Master Anoop. M	Kerala
Master Md. Nurul Huda	Manipur
Km. Parvati Amlesh	Chattisgarh
Master Rohit Maruti Mulik	Maharashtra
Master Raj Narayanan	Kerala
Master Uttam Kumar	Uttar Pradesh
Master Bibek Sharma	Sikkim
Late Km. Shruti Lodhi	Uttarakhand
Late Km. Chhampa Kanwar	Rajasthan
Km. Lalmawizuali	Mizoram
Master Shrawan Kumar	Rajasthan
Master Lovelystar K. Sohphoh	Meghalaya
Master Gurjeevan Singh	Punjab
Km. Sunita Murmu	West Bengal

* **Geeta Chopra Award**

** **Sanjay Chopra Award**

*** **Bapu Gaidhani Award**

35

बच्चों की प्रस्तुति

डहल ठुंगरी (बोडो)

डहल ठुंगरी लोक नृत्य बोडो युवतियों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है जिनको लड़ाकू समुदाय कहलाने पर गर्व है। डहल का मतलब कवच और ठुंगरी का मतलब तलवार होता है। यह नृत्य बोडो लोगों के एकमात्र धर्म 'बाथू' की पूजा के अवसर पर किया जाता है। इसके साथ–साथ वे लोग अपने भगवान को श्रद्धांजलि अर्पित करने का प्रयास करते हैं तथा अपने समुदाय पर आने वाली किसी बुराई से बचाने के लिए सुरक्षा हेतु प्रार्थना करते है।

लोकनृत्य – रंगीलो राजस्थान

राजाओं, महाराजाओं की भूमि राजस्थान सांस्कृतिक रूप से समृद्ध है। इसकी कलात्मक तथा सांस्कृतिक परम्पराएँ है जो प्राचीन भारतीय जीवन शेली को दर्शाती है। यह विभिन्न लोक कला रूपों का स्वर्ग रहा है। राजस्थान का इतिहास राजपुत राजाओं की वीरतापूर्ण कार्यों की अनेकों गाथाओं से ओतप्रोत है।

राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय, अभलवास, ज्वालापुरी नई दिल्ली के छात्र रंगीलो राजस्थान का लोक नृत्य प्रस्तुत कर रहे हैं। नृत्य कुओं से पानी खींच कर लाने पर केंद्रित है तथा इसकी पृष्ठभूमि में राजस्थान के किलों की शानो–शौकत दर्शाए गए हैं। इस नृत्य के विभिन्न भाग भंगिमाओं के जरिए योद्धाओं की वीरता एवं उनके त्याग का चित्रण किया जा रहा है। यह नृत्य इस राज्य की सांस्कृतिक रिवाजों परम्पराओं और सौंदर्यता के चित्रण से ओतप्रोत है। संगीत सरल सा है और गीत में रोजमर्रा के सम्बन्ध दर्शाए गए हैं।

Children's Pageant

Dahal Thungri (Bodo)

The Dahal Thungri Dance is performed by the women folk of the Bodos, who take pride in calling themselves as warrior community. Dahal means Shield and Thungri means Sword. This dance is performed while worshipping "Bathou" the only religion of the Bodos. With this, they try to pay tribute to their God and seek his protection while seeking to ward off any evil in store for their community.

Folk Dance - Rangeelo Rajasthan

Rajasthan, the land of Rajas and Maharajas is culturally rich and has artistic and cultural traditions which reflect the ancient Indian way of life. It has been a heaven of various folk art forms. The history of Rajasthan is filled with numerous legends of heroic acts of the Rajput kings. The Royal state is also globally famous for its royal charm and beautiful landscapes.

The students of Govt. Sarvodaya Kanya Vidyalaya, Amalvas, Jwalapuri New Delhi are presenting a folk dance of Rangeelo Rajasthan. The dance is focussed around fetching water from wells and depicts the elegant and marvellous forts of Rajasthan. The bravery and sacrifices of warriors is being described in various ways through this dance. This dance is an account of the culture, customs, tradition and beauty of the State. The music is uncomplicated and song reflects the day-to day relationship.

परभा दण्डनाच

परभा 'दण्डनाच' नामक लोकनृत्य मंगलाचरण के रुप में की जाने वाली एक नृत्य शैली है जो पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही कठिन उपासना पद्यति के प्रथम भाग के रुप में इस नृत्य शैली मे मान्यताप्राप्त हैं। इस नृत्य के लिए किसी औपचारिक मंच की आवश्यकता नहीं पड़ती। इसे आमतौर पर किसी गाँव या कस्बे के चौपाल पर खुली जगह में किया जाता है। मुख्य दण्डनाच शुरु करने से पहले परभा नर्तक आराधना की भावभंगिमा में मंच पर पेश होता है। अपने कठिन पद–विन्यास, लय, मण्डलाकार कलाबाजी से लेकर विशिष्ट धुनों के कारण इसे कुशल नर्तक द्वारा ही किया जा सकता है। यहाँ तक कि काफी अनुभवी परभा नर्तक 10 मिनट से अधिक समय तक इस नृत्य को नहीं कर सकता। धार्मिकता से ओत प्रोत रहते हुए बिना कुछ खाये–पिये नृत्य के समाप्त होने तक परभा नर्तकों को उपवास करना पड़ता है। नृत्य के दौरान कोई गायन नहीं किया जाता बल्कि ढ़ोल और घंटा की सिर्फ विशेष धुनें बजाई जाती हैं। इस नृत्य में मुख्य नर्तक के साथ दो सहायक नर्तक भी होते हैं जो हाथ में एक मांद लेकर नृत्य करते हैं जिसमें चंदन, धूप, गुगुल जल रहा होता है और उससे पवित्र धुआँ निकल रहा होता है। परभा नर्तक विशेष पोशाक पहने दिखाई दे रहे हैं और उनकी पीठ से बंधी परभा उस दैवी ओज़ को दर्शा रहा है जो देवी–देवताओं के चारो ओर होता है।

भारतीय संस्कृति

भारत विभिन्न संस्कृतियों, धर्मो, रीति–रिवाजों, भाषाओं एवं वेशभूषा की संगम–स्थली है। इस देश में सभी लोग अपनी–अपनी संस्कृति को धर्म, भाषा, लोकगीत, नृत्य, वेशभूषा के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं।

इसके साथ ही हम सब भारतवासी सभी संस्कृतियों का समान रूप से आदर करते हुए आपसी भाईचारे, पारस्परिक सहयोग व सद्भावना तथा अखण्डता को प्रदर्शित करते हैं। यही कारण है कि हमारी संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति होने के बावजूद हमें कोई जुदा नहीं कर सका है। तभी तो इकबाल ने कहा है कि मिस्त्र, युनान, रोम आदि मिट गए परन्तु हमारी हस्ती ही कुछ ऐसी है कि हमें कोई नहीं मिटा सका है। भारतीय संस्कृति की सशक्त कला शास्त्रीय नृत्यों ने विरासती धरोहर के रुप में सदियों से हमारे देश का मस्तक ऊँचा रखा हुआ है। बच्चों द्वारा प्रस्तुत शास्त्रीय नृत्यों भरतनाट्यम, कत्थक, ओडिसी, कुचिपुड़ी, मणिपुरी, कत्थकली, मोहिनी अट्टम, सत्रीय के माध्यम से दर्शाया है कि हिमालय से कन्याकुमारी तक तथा ब्रहमपुत्र से कैम्बे की खाडी तक की सारी धरती भारत की अभिन्न सम्पदा है। हम सब भारतवासी एकजुट होकर अपने वनों, वनस्पतियों एवं विरासती धरोहरों की सुरक्षा करते रहेंगे। स्कूली बच्चों का उत्साह एवं बुलन्द हौंसले को देखते हुए हम गर्व से कह सकते हैं कि भारत का भविष्य सुनहरा होगा।

Parbha Dandanach

Parbha is a dance form used as prelude to the Dandanacha and has been accepted as the most religious first part of Dandanacha having some stringent principles carried over from generation to generation traditionally. This dance form does not require any proscenium stage for its performance. It is usually performed in the open air at a central place of the village or at any important meeting place by the side of crossroads in small towns. Before enacting the main Dandanacha the Parana Dancer performs as a sanctifying gesture to set the stage for Dandanacha. Parbha is performed by seasoned exponent, due to its rigorous stepping, movements and gyrating acrobatic to specific rhythms, even the most experienced Parbha dancer cannot dance more than 10 minutes. The Parbha dancers remain in total fasting till the end of dance, probably to imbibe a religious overtone to the performance. No songs are sung during the dance, only Dhol and Ghanta are played with a specific rhythm. Two assistant dancer acts as co-dancer to the main Parbha dancer who also carries pots from which emanates the holy smokes of Sandal, Dhup, Guggul etc. The costume of Parbha dancer is specific and Parbha tied on his back is a pictorial representation of holy signs and symbolizes the divine aura, which is found around God and Goddesses.

Indian Culture

India is a confluence of various cultures, religions, traditions, languages and costumes. People of this country express their cultures through their religions, languages folk songs and dances as well as their costumes.

Waving equal respect for all these cultures, we show and demonstrate brotherhood, mutual co-operation and harmony among all and this displays our integrity and unity. Owing to all these characteristics of our myriad culture being the oldest culture of the world, nothing can separate and disintegrate our unity. That is why famous urdu poet Iqbal wrote " Egypt, Greece, Roman cultures disappeared from the world for ever but there is something mysterious and wonderful in our country that no force could efface or destroy our identity." Authentic and marvelous classified dances of our culture are legacy which has held head of our country high in respect and greatness. Classical dances, Bharatnatyam, Kathak, Odissey, Kuchipudi, Manipuri, Kathakkali, Mohiniattam, presented by our children displays that the vast stretch of land from the Himalaya to Kanyakumari and the Brahmaputra to the Bay of Cambey is an integrate part and undivided prosperity of our same country. We, all Indians would protect and save unitedly our forest flowers fauna and our legacy. When we see great enthusiasm and courage of our school children displayed through their intricate dances, we can say with proud that India holds a golden bright future ahead.

37

लोक नृत्य भांगड़ा

भांगड़ा नृत्य प्रायः फसल उत्सव मनाने के लिए बैसाखी के समय किया जाता है। नर्तक रंगीन लुंगी, लम्बा कोट और पगड़ियों से युक्त पौशाक पहनते हैं। नृत्य भंगिमाओं में जुताई, बीज रोपाई और फसल कटाई चक्र का चित्रण होता है।

भांगड़ा के विशुद्ध स्वागत में संगीत और एकल ढ़ोल की ताल के साथ गीत–गायन का मिश्रण होता है। गीतों को हमेशा पंजाबी भाषा में गाया जाता है और ये गीत प्रायः सामाजिक अथवा सांस्कृतिक विषयों से सम्बद्ध होते हैं। इनमें शादी, धन की चाहत और नृत्य अथवा शराब पीने तक के रंग शामिल होते हैं। वर्तमान भांगड़ा कलाकार आज के ज्वलंत विषयों सहित सभी प्रकार के स्त्रोत से प्रेरणा लेते हैं। भांगड़ा संगीत के साथ साथ संदेश भी प्रदान करता है।

कई बड़ी सफल फिल्मों में ध्वनि संगीत देने के लिए इस उद्योग में भांगड़ा कलाकारों के इस्तेमाल से बालीवुड की दुनिया में भांगड़े का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। कुछ विश्वविद्यालयों तथा संगठनों में भी भांगड़े को आयोजन की शुरूआत हो गई है। भांगड़ा प्रतियोगिता का होना इस कला की लोक प्रभुता का द्योतक है।

Folk Dance Bhangra

Bhangra began as a dance to celebrate the harvest and was usually performed at the time of Baisakhi (the harvest festival). The dancers costumes comprise colourful lungis, waistcoats and turbans. The dance movements are supposed to depict the cycle of ploughing, sowing and reaping.

In its purest form Bhangra is a mix of a singing accompanied by music and the beat of a single drum known as a dhol. The lyrics are always sung in the language of Punjabi and usually relate to social or cultural issues. These can be anything from marriage and love to money and dancing or even getting drunk. Current Bhangra artists take their inspiration from all kinds of sources, often dealing with hot topics of the time. Bhangra seeks to offer a message along with its music.

The influence of Bhangra can be seen clearly in the world of Bollywood with Bhangra artists being used to supply the soundtracks to some of the biggest movies from this industry. Some universities and organizations have even started holding Bhangra dance competitions such is the popularity of the genre.

Printed at Indu Cards & Graphics, Chawri Bazar, Delhi-06